श्री हरगोविन्दपुर विकास खण्ड के अन्तर्गत माँड गाँव
में एक हस्पताल के भवन का निर्माण

कुरुक्षेत्र

सामुदायिक योजना प्रशासन का मासिक मुखपत्र

वर्ष १] दिसम्बर १९५५ [अंक २

विषय-सूची

खुशी का दिन ! [फोटो : टी०एस०नागराजन]		आवरण चित्र
मुझे याद है···	जवाहरलाल नेहरू	३
प्रगति का देवता	चक्रवर्ती राजगोपालाचारी	५
कर्म सेवक [कहानी]	जे० एम० लोबो प्रभु	७
अनाज का उचित संग्रह	के० आर० सोन्ताक	१०
समानता ! [व्यंग्य-चित्र]	सेमूअल	१३
नया प्रभात आ रहा ! [कविता]	प्रयागनारायण त्रिपाठी	१४
सामुदायिक योजनाओं की प्रगति [चित्रावली]	...	१५-१८
विकास का प्रतीक : बटाला	...	१९
एक नया प्रयोग	एन० ई० एस० राघवाचारी	२२
चिंगलपट में नया जीवन	...	२३
न्यूनहैम दम्पति	अजीत गुप्त	२४
पंजाब का ग्राम्य जीवन	एम० एस० रन्धावा	२५
समस्या कैसे हल हुई	सावित्रीदेवी वर्मा	२८
प्रगति के पथ पर	...	३१
समाचार समीक्षा	...	३२

सम्पादक :
केशवगोपाल निगम
[सहकारी सम्पादक प्रकाशन विभाग]
उप-सम्पादक : *मनोहर जुनेजा*

मुख्य कार्यालय
ओल्ड सेक्रेटेरिएट,
दिल्ली ८

वार्षिक चन्दा २॥)
एक प्रति का मूल्य ।)

विज्ञापन और एजेन्सी के लिए
बिजनेस मैनेजर पब्लिकेशन्स डिवीज़न,
दिल्ली—८ को लिखें

COMMUNITY
PROJECT

मुझे याद है...

जवाहरलाल नेहरू

एक तरह से यह कहना ठीक होगा कि गान्धी जी के आने पर ही हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन में जान पड़ी। उनसे पहले भी कई बड़े-बड़े नेता थे, जिनकी हम इज्ज़त करते थे, लेकिन सही मानों में राष्ट्रीय आन्दोलन गान्धी जी के आने पर ही आरम्भ हुआ। ऐसा हुआ क्यों? सिर्फ़ इस लिए नहीं कि गान्धी जी बड़े आदमी थे, बल्कि इस लिए कि वह बड़े नेता, बड़े सिपाही, बड़े सेनानी और राष्ट्रीय सेना के सबसे बड़े सेनापति थे। यह सच है कि वह शान्ति प्रिय सेनापति थे और उनकी सेना भी शान्ति सेना थी। वह अपनी किस्म के एक ही सिपाही थे—दुश्मन का भी बुरा न सोचने की शिक्षा वह हरेक को देते थे। लेकिन नियंत्रण के मामले में वह किसी से भी कम नहीं थे। अगर आप पिछले ४० साल के इतिहास से परिचित हैं तो आपको मालूम होगा कि कितनी बार नियंत्रण ख़त्म हो जाने पर उन्होंने असहयोग आन्दोलन एक दम रोक दिए।

वह ३५ करोड़ लोगों की आज़ादी के लिए लड़ रहे थे—उनकी ताकत, उनका हौसला और उनकी इज्ज़त बढ़ाना चाहते थे। वह हमेशा गरीबों का ख्याल रखते थे। वह खुद भी उन्हीं की तरह रहते थे। वह उन्हें ग़रीबी से छुटकारा दिलवाकर उनमें नया हौसला, नई भावना और नैतिकता की नई बुनियाद रखना चाहते थे।

इसी शताब्दी की तीसरी दशाब्दी की बात है। गान्धी जी का सन्देश पहले-पहल उत्तर प्रदेश के गाँवों में पहुँचा। तब, उन हज़ारों नौजवानों में से मैं भी एक था, जो गान्धी जी के सन्देश को सुन कर जोश से भर गए और घर-बार, काम-काज सब कुछ भूल कर एक तरह से नशे में पागल होकर गाँवों के दौरे करने लगे। उससे पहले हम गाँवों में कभी नहीं गए थे। अंग्रेज़ी तालीम हमने शहरों में रहकर पाई थी।

और इस तरह पहले-पहल हमें गाँवों में रहने वाले अपने भाइयों का पता चला। उनकी ग़रीबी, दुखदर्द और निस्सहायता का ज्ञान हुआ। हर कोई उन गरीबों को ठोकर मारता था। गान्धी जी ने इन्हीं दुखी लोगों को आशा का सन्देश दिया। डरो मत हम सबको मिल-जुल कर काम करना चाहिए। हम पर जो कुछ भी बीते; उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए। हमें जेल जाने से भी नहीं डरना चाहिए।

बिजली की तरह यह सन्देश गाँव-गाँव में पहुँच गया। ग़रीब देहाती उठ खड़े हुए। उनकी आँखों में चमक थी और दिल में नया जोश। यह मेरी आँखों देखी बात है। उसके बाद भी जो कुछ हुआ, वह मुझे पूरी तरह याद है। हमने पहले-पहल सत्याग्रह आन्दोलन में हिस्सा लिया और सन् १९२०-२१ में हज़ारों की संख्या में जेलों में गए।

उस वक्त हमारी हालत कुएँ के मेंढक की तरह थी। हम बाहर की दुनिया से अलग-थलग थे। हमारा देश अलग-सा था और हम कई जातियों और श्रेणियों में बँटे हुए थे। हमारी गिरावट और गुलामी का यही कारण था। मैं यह सब आपको इस लिए याद दिलवा रहा हूँ कि हमें खुद अपने और औरों के इतिहास से सबक़ सीखना है। हम अब आज़ाद हैं। दुनिया के देश एक दूसरे के नज़दीक आ रहे हैं। मुल्कों के बीच के फासले और दीवारें लगभग समाप्त हो रही हैं। अब यह दीवारें बिलकुल ख़त्म हो जाएँगी। अगर हम अब कुएँ के मेंढक की तरह रहे तो दुनिया के मुल्कों में पीछे रह जाएँगे। इसलिए हमें अपना दृष्टिकोण बदलना है, ऐसा दृष्टिकोण अपनाना है जो एक आज़ाद देश और आज की प्रगतिशील दुनिया के मुताबिक हो।

आज की दुनिया में आप किसी भी क्षेत्र में काम क्यों न करें, ट्रेनिंग बहुत ज़रूरी है। विज्ञान, इन्जीनियरिंग, चिकित्सा—हर क्षेत्र में ट्रेनिंग ज़रूरी है। इसलिए अगर हिन्दुस्तान को तरक्की करनी है, तो उसे हर क्षेत्र में ट्रेनिंग पाए हुए कार्यकर्त्ताओं

की ज़रूरत पड़ेगी। जितनी ज्यादा ट्रेनिंग लोगों को मिलेगी, देश उतना ही तरक्की करेगा। हमारे सामने अपनी सामुदायिक विकास और राष्ट्रीय विस्तार सेवा योजनाएँ हैं। जिस तेज़ी से इन योजनाओं का भारत के देहाती इलाकों में विस्तार हुआ है, शायद ही किसी और देश में हुआ हो। इनको शुरू हुए तीन ही साल हुए हैं और अब तक लगभग १,२०,००० गाँवों में काम शुरू हो चुका है और आने वाले कुछ सालों में लगभग ५ लाख गाँवों में इन योजनाओं का विस्तार हो जाएगा। इन सब विकास योजनाओं के लिए ट्रेनिंग पाए हुए लोगों की ज़रूरत है। अब सवाल यह उठता है कि हमारे ट्रेनिंग देने वाले केन्द्र और विश्वविद्यालय उस प्रकार की ट्रेनिंग देते भी हैं या नहीं, जिस प्रकार की हमें ज़रूरत है। यह एक बड़ी कठिन समस्या है। इन्जीनियरों, ओवरसीयरों, ग्राम सेवकों और समाज सेवकों आदि को ट्रेनिंग देने के लिए हम नए-नए केन्द्र खोल रहे हैं।

आखिरकार अगर काम रुका भी तो पैसे की वजह से नहीं रुकेगा, ट्रेनिंग पाए हुए कार्यकर्त्ताओं के बिना रुकेगा। एक क्षेत्र में ट्रेनिंग पाए हुए कार्यकर्त्ता काफी हों लेकिन किसी और क्षेत्र में न हों, तो भी काम तो रुक ही जाता है। इसलिए अन्ततः हमें हर क्षेत्र के लिए ट्रेनिंग पाए हुए लोगों की ज़रूरत होगी। नए हिन्दुस्तान के निर्माण के महान् कार्य में हम सब साझीदार हैं।

मैं हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक बननेवाले नए-नए कारखानों, नई-नई चीज़ों और बिजली तथा हमारे खेतों की सिंचाई करने के लिए बनाई जा रही बड़ी-बड़ी बहु-उद्देशीय योजनाओं को देखता हूँ। गाँवों में तेज़ी से फैलती हुई सामुदायिक विकास और राष्ट्रीय विस्तार सेवा योजनाओं को भी देखता हूँ। यह हमारे देश की सबसे बड़ी घटना है। देहाती भारत का रंगरूप, सैंकड़ों कारखानों के बनने से नहीं बदलेगा, वह बदलेगा इन सामुदायिक विकास योजनाओं से। गाँव भारत की आत्मा हैं, हज़ारों सालों से भारत की बुनियाद हैं और इन में महान् क्रान्ति हो रही है। जैसे-जैसे मैं इस विकास कार्यक्रम को देखता हूँ, मेरे सामने बदलते हुए हिन्दुस्तान का नकशा घूम जाता है और मैं जोश से भर जाता हूँ, सिर्फ उन चीज़ों को देखकर नहीं जिनको हम बना रहे हैं बल्कि उनके फलस्वरूप नया जीवन पानेवाले लाखों बच्चों, पुरुषों और स्त्रियों का खयाल करके।

मैं समझता हूँ किसी भी देश में इतना विस्तृत और क्रान्तिकारी कार्य अब तक नहीं हुआ है जितना सामुदायिक विकास योजना के अधीन भारत में हो रहा है। लोग देहात का रंग-रूप ही बदल रहे हैं। यह एक विशाल कार्य है और इस विशाल कार्य में तभी सफलता मिलेगी जब सब इसे अपना कार्य समझेंगे। कुछ लोगों को ही नहीं, बल्कि हम सबको इस महान कार्य में अपना-अपना योगदान देना है।

हमने बहुत गलतियाँ की हैं और कर भी रहे हैं, लेकिन मैं आशा करता हूँ कि हमें यह समझने की बुद्धि है कि हम कहाँ गलतियाँ करते हैं और उनको दूर करने की कोशिश करेंगे।

प्रगति का देवता

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

शहर में बहुत चहल-पहल थी। सड़कें खचाखच भरी हुई थीं। आगे बढ़ने को आकुल लोगों, गाड़ियों और साइकिल सवारों का ताँता लगा हुआ था।

हरेक व्यक्ति दूसरे को धकेल रहा था, उसका रास्ता रोक रहा था। हरेक दूसरे से आगे बढ़ जाना चाहता था। शोरोगुल बेहद था। भीड़ में जो महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, रह-रह कर 'आगे बढ़ो' 'आगे बढ़ो' का आदेश देते थे। पर नतीजा क्या निकलता था? हर व्यक्ति इस आदेश को सुन कर खुद भी यही चिल्ला उठता था और भीड़ की रेल-पेल बढ़ती ही जा रही थी। इस गड़बड़ में कुचले जाने के कारण कई दुर्बल व्यक्ति पीड़ा से चिल्ला रहे थे।

तभी एक देवता का आगमन हुआ, वह था प्रगति का देवता। उसने कहा–

"ईश्वर के बच्चो, चीखो-चिल्लाओ नहीं।

"जो उत्तर की ओर जाना चाहते हैं, वे सड़क के पश्चिमी अर्ध पर चलें; जो दक्षिण की ओर जाना चाहते हैं वे पूर्वी भाग पर चलें!

"उत्तर की ओर जानेवाली गाड़ियाँ, सड़क के पश्चिमी भाग पर चलें। एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश मत करो; आगे तभी बढ़ो जब तुम से आगे चलनेवाली गाड़ी खुद-ब-खुद धीमी हो जाए और तुम्हें आगे बढ़ने का इशारा करे। दक्षिण की तरफ़ जानेवाली सब गाड़ियाँ सड़क के पूर्वी भाग पर चलें। गाड़ी होशियारी से चलाओ। अगर आप को रुकना है या धीरे जाना चाहते हैं, तो अपने पीछे से आती हुई गाड़ी को आगे बढ़ने का संकेत दे दीजिए।

"साईकल सवारो, एक दूसरे के बराबर मत चलो। सड़क पर हँसी-मज़ाक करते हुए मत चलो, यह सब तो यात्रा खत्म होने के बाद भी हो सकता है।

"साइकलों या गाड़ियों पर सफ़र करने वाले यात्रियो, पीछे की लाल बत्ती जलाना मत भूलो ताकि तुम्हारे पीछे आनेवाले सतर्क हो कर चलें।

"पैदल यात्रियो, उत्तर की तरफ़ जाने के लिए पश्चिमी पटरी पर जाओ और दक्षिण की ओर जाने के लिए पूर्वी पटरी पर चलो। अगर सड़क पर एक ही पटरी है, तो भी एक दूसरे को धक्का मत दो, गुस्सा न करो, कुछ देर के लिए ठहर जाओ और दूसरे को रास्ता दे दो। मुस्कराते हुए एक दूसरे के सामने आओ।"

सबने इस आवाज़ को सुना। देवता गुस्से से चिल्लाए नहीं, परन्तु उन्होंने आज्ञा दी और इसके बाद खामोशी से प्रतीक्षा करने लगे। फिर बोले और बोलने के बाद खामोश हो गए। थोड़ी देर में सड़क पर व्यवस्था हो गई। हरेक व्यक्ति अपनी राह चल रहा था। शोर का नामोनिशान नहीं था। इस आसानी से सब

यातायात चल रहा था मानो कभी कोई कठिनाई ही न हुई हो।

यह अध्याय यातायात नियमों के सम्बन्ध में नहीं है, यह तो बस एक दृष्टान्त मात्र है।

आगे बढ़ने की इच्छा सभी में है। चारों ओर महत्वाकांक्षा है– जनता में, सरकारी कर्मचारियों में, व्यापारियों में, मजदूरों में, पुरुषों में और स्त्रियों में। सभी में जोश है, जिन्दा-दिली है लेकिन साथ ही शोर, जल्दबाज़ी, रेलपेल और गड़बड़ भी है जिससे सब किया कराया चौपट हो जाता है।

"तुम्हारे पास ईश्वर-प्रदत्त जीवन है, शक्ति है, इच्छा है परन्तु इसे व्यवस्थित करो मेरे बच्चो, अपनी इच्छाओं, अपनी कार्य-शक्ति, अपने जीवन को व्यवस्थित करो। आगे बढ़ो परन्तु औरों से आगे बढ़ने की कोशिश मत करो। जब तुम्हारी रफ्तार घटे तो पीछे आनेवालों को आगे बढ़ने का संकेत दो। नियम के अनुसार ही दाएँ या बाएँ चलो। मन्त्र रखो और मुस्कराते रहो, चिल्लाओ मत", प्रगति के देवता का यही आदेश है।

आज ही नहीं सभ्यता के आरम्भ ही से वह यही बात कहता आया है। ईशोपनिषद् में लिखा है––

ईशावास्यमिदं सर्वयत्किन्चजगत्यांजगत्

'पथ पर हर व्यक्ति का अधिकार है–यह पवित्र भूमि है।'

तेन त्यक्तेन भुन्जीथाः मागृधः कस्य चिद्धनम्

जो कुछ ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसी से सन्तोष करो। दूसरों को आनन्दमय देख कर उनकी ओर ईर्ष्या की दृष्टि से मत देखो।

कुर्वन्नेवह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥

कर्मशील बनो, कर्मशील बनकर ही तुम दुनिया में ज़िन्दा रहो। कार्य करो, परन्तु उसका फल तुम्हारी आत्मा में क्रोध या लालच पैदा करके उसे दूषित न कर दे। लगाव न रखते हुए कार्य करो! इस प्रकार तुम सौ वर्ष या उससे भी अधिक अच्छी प्रकार जीवित रहो।

जीवन-पथ पर चलने का यही नियम है। प्रकाश को बुझने न दो। अगर रोशनी खत्म हो गई तो पथ पर अन्धेरा ही अन्धेरा हो जाएगा और तुम ग़लत जगह पर फँस जाओगे।

असूर्यानाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।
तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति येकेचात्महनोजनाः ॥

आत्मा के अस्तित्व से इन्कार करके तुम प्रकाश को क्यों बुझने देते हो, आत्मा को न माननेवाला व्यक्ति इसकी हत्या करता है। वह अन्धकार में भटकेगा, सही और ग़लत में भेद नहीं कर पाएगा। उसका जीवन नरक बन जाएगा, प्रकाशहीन हो जाएगा।'

ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व को न माननेवाला इन्सान अन्धेरी रात में बग़ैर रोशनी के चलनेवाली गाड़ी के समान है।

परन्तु अगर आत्मा न भी हो, तो क्या नैतिकता भी नहीं है? सूर्य अगर दिखाई न भी दे, तो भी चन्द्रमा तो रहता ही है। लेकिन चन्द्रमा को आलोक तो सूर्य से प्राप्त होता है। आलोक घटता है, बढ़ता है और फिर घट जाता है और कितने ही बादल पीले चन्द्रमा के आलोक को छिपा लेते हैं।

दूसरों को आनन्दमय देखकर ईर्ष्या न करो

कर्म सेवक

जे० एम० लोबो प्रभु

अन्धकार के आवरण से ढके हुए समुद्र-तट पर अकेला बैठना मुझे उतना ही अच्छा लग रहा था जितना किसी प्रेमी को अपनी प्रेमिका के साथ बैठना अच्छा लगता है। दिन भर मुझे काम से फुर्सत नहीं मिली थी और मैं थक कर चूर हो गया था। सुबह ६ बजे से मैं मुख्य मन्त्री के साथ तिरुकलीकुन्द्रम विकास खण्ड का दौरा कर रहा था। उन्होंने ४०० ऐसे मकानों का निरीक्षण किया जिनका रंगरूप ही बदल दिया गया था। दीवारों पर नया प्लस्तर किया गया था और सफ़ेदी भी हो चुकी थी। किवाड़ रौग़न होने के कारण चमक रहे थे और छप्परों पर नई घास-फूस डाली जा चुकी थी। हर मकान के बाहर मकान मालिक का नाम सुन्दर अक्षरों में लिखा हुआ था, जिससे मकान की सुन्दरता तो बढ़ती ही थी, साथ ही उसका अपना एक पृथक् व्यक्तित्व भी नज़र आता था। घरों के अन्दर मुख्य मन्त्री ने सफ़ाई और व्यवस्था पाई। बहुत कुछ ऐसा भी उन्हें नज़र आया जिससे गाँववालों की रचनात्मक प्रवृत्तियों का आभास मिलता था। उन्होंने जो कुछ देखा, उससे वह बहुत प्रभावित हुए। उन घरों के मालिकों ने भी जो लापरवाही के कारण भद्दे और असुन्दर दिखाई पड़ते थे, मुख्य मन्त्री के सामने यह मांग रखी कि उनके मकानों का रंग-रूप भी बदल दिया जाए। महाबलीपुरम के हरिजन क्षेत्र का तो मुख्य मन्त्री को नकशा ही बदला हुआ मिला। मकान मालिकों को अपने मकानों का नया रूप बहुत भाने लगा था, फलों के कई नए वृक्ष लगाए गए थे। बस्ती के लोगों ने विस्तार कार्य आरम्भ कर दिया था और छोटी-मोटी सड़कें भी बना ली थीं। मुख्य मन्त्री ने २ लाख रुपए की लागत से बननेवाले नए महाबलीपुरम अतिथि-सत्कार गृह तथा ७५० रुपए के ऋण से बनाए जाने वाले एक नए मकान का शिलान्यास किया और एक सामुदायिक केन्द्र और बच्चों के एक व्यायाम-केन्द्र का उद्घाटन किया। उन्होंने दस से अधिक स्थानों पर भाषण दिए जिनमें इन कार्यों की प्रशंसा की।

मैं बालू पर लेटा हुआ था। जो कुछ हुआ था उससे मेरे हृदय में काफी सन्तोष था। मेरी निगाहें अशान्त सागर की तरफ़ थीं, मुझे वह अशान्ति अन्धकार के कारण बढ़ती-सी लगी। सायंकालीन आकाश के बदलते रंगों में घिरे हुए तट के मन्दिरों को भी मैं देख रहा था। जब अन्धकार बढ़ जाता है तो मन्दिर आकाश को चूमते से प्रतीत होते हैं। नहीं जानता कितने समय तक मैं उस मन्दिर की तरफ़ टकटकी बाँधे देखता रहा--आखिर इस बढ़ते हुए अन्धकार में मन्दिर मेरी नज़रों से ओझल हो गया। लाईट हाऊस की घूमती हुई रोशनी में कभी-कभी वह मन्दिर चमक उठता था। उस निर्जन तट पर, जिसने पीढ़ियों की गुनगुनाहट सुनी थी और जो फिर भी समय की शक्ति से अछूता होने का दम भरने का प्रयास करता मालूम होता था, मुझे अपने एकाकीपन और क्षुद्रता का आभास होने लगा।

लेकिन वह तट सचमुच एकाकी नहीं था। तटवर्ती मन्दिर से सफ़ेद कपड़े पहने एक व्यक्ति निकला और समुद्र के किनारे खड़ी चट्टानों पर चढ़ने लगा। मेरी तन्द्रा टूट गई और मैं उस व्यक्ति को देखने लगा। लाईट हाऊस के प्रकाश में मैंने एक परेशान व्यक्ति को समुद्र की तरफ़ देखते पाया, रह-रह कर वह मेरी तरफ़ भी देख लेता था। अन्त में वह मेरी तरफ़ बढ़ने लगा। मैं अकेला था। एक क्षण के लिए तो मैं सोचने लगा कि वह मेरी तरफ़ क्यों आ रहा है। सामान्यतः मुझे डर नहीं लगता और हाल ही में मैंने अपने से तगड़े और नौजवान लोगों को आसानी से पछाड़ा था। फिर भी मैं उठकर बैठ गया और उसको अपनी तरफ़ आते देखने लगा। मेरे पास पहुँचने पर वह खामोश खड़ा हो गया। मैं कुछ कहने ही वा ला था कि वह मेरे पैरों में गिर पड़ा।

"हुज़ूर! मैं पिछले एक सप्ताह से आपका पीछा कर रहा हूँ," वह बोला।

मुझे उसकी इस बात में तत्व नज़र नहीं आया और मैंने मज़ाक के ढंग से कहा—"क्या तुम मुझे विश्व सुन्दरी समझ बैठे हो?"

"हुज़ूर! मैं मरना चाहता हूँ। आपने मुझे अपने दफ्तर से निकाल दिया है। और कहीं नौकरी मिलती नहीं है और मैं अपने गाँव वापस लौटना नहीं चाहता।"

मुझे यह समझने में देर न लगी कि वह किसी अस्थायी स्थान पर काम करने वाले अनेक लोगों में से एक है।

मैंने सान्त्वना देते हुए कहा—"घबराओ मत, नौकरी तुम्हें मिल ही जाएगी। हरेक के अच्छे-बुरे दिन आया ही

करते हैं।"

"आप मुझे अर्दली ही बना लें; चपरासी रख लें। मैं अपने गाँव नहीं लौटना चाहता," उसने फिर कहा।

"क्यों?" मैंने पूछा। वह खामोश रहा। "तुम्हें शर्म आ रही है। क्या तुम विवाहित हो?"

मुझे उसने बताया कि उसने हाल ही में शादी की थी और उसकी पत्नी यह समझती है कि दफ्तर का काम अच्छी तरह चल रहा है। उसके माता-पिता को भी उस पर गर्व है। अगर वह गाँव वापस लौटा तो उनका सिर नीचा हो जाएगा।

"क्या तुम समझते हो कि क्लर्की उनके काम से बेहतर है?" मैंने प्रश्न किया।

"जी हाँ," वह विश्वास के स्वर में बोल रहा था—"गाँव में रखा ही क्या है, सिवाए धूल और कीचड़ के। कम से कम मैं तो उन गन्दे घरों में जाकर अपने भाग्य को कोसना ठीक नहीं समझता।"

"तुम्हें इसकी क्या आवश्यकता है? क्या तुम घर को फिर से नहीं बना सकते? क्या तुम उनकी खेती में सुधार नहीं कर सकते? तुम्हें उनके कामों में सिर्फ़ अपनी बुद्धि लगानी होगी, मेहनत तो वे स्वयं कर लेंगे। केवल उन्हीं कामों को तुम्हें स्वयं अपने हाथों से करना होगा, जिनको वे नहीं करते। तुम्हें शिक्षा देने का यही उद्देश्य था। उनको सिखाओ, उनका पथ-प्रदर्शन करो। क़लम घिसने से यह कहीं अच्छा है।"

"मैं नेतृत्व कैसे कर सकता हूँ?" उसका स्वाभाविक प्रश्न था।

"अपनी ईमानदारी और सेवाभाव से। शायद तुम यह नहीं जानते कि व्यक्तित्व का विकास दूसरे लोगों की प्रगति में अभिरुचि लेने से होता है। तुम्हारा दृष्टिकोण जितना विस्तृत होगा, तुम उतने ही महान् होगे। महात्मा जी इसलिए महान् थे कि वह करोड़ों लोगों का ख्याल रखते थे। संसार के सबसे समृद्ध व्यक्ति का मरने के बाद कोई अस्तित्व नहीं है, क्योंकि वह अपने अतिरिक्त किसी के सम्बन्ध में कुछ सोच भी नहीं सकता। जाओ, ग्राम वासियों के सम्बन्ध में सोचना आरम्भ कर दो और तुम उनके नेता बन जाओगे।"

"ग्राम वासियों के लिए मेरे विचार बेकार हैं," उसने संशय प्रकट किया।

"तब तुम स्वयं काम करो, कम से कम ८ घंटे रोज़ अपने खेत और घर को सुधारने में लगाओ। एक महीने में ही तुम अनुभव करोगे कि तुम बहुत कुछ कर चुके हो और अन्य लोगों को वही बहुत कुछ सिखाने में सहायता दे सकते हो। अगर मेरे पास हर गाँव में एक ऐसा व्यक्ति होता जो रोज़ आठ घंटे ठीक ढंग से परिश्रम कर सके, तो मैं देश का रंग-रूप ही बदल देता—केवल एक आदमी! क्या तुम पहले आदमी हो सकते हो? कोशिश करो, तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस प्रकार आत्म-विश्वास से तुम अपना और अन्य लोगों का भाग्य बदल सकते हो।" मैं बोलता रहा मानों किसी भीड़ के सामने भाषण दे रहा हूँ। उस नवयुवक ने मेरे सबसे प्रिय विषय की चर्चा करके मुझे उत्तेजित कर दिया था।

परन्तु मेरे उपदेश का कोई विशेष प्रभाव न पड़ा। वह बोला—"हुज़ूर, आप अपने आपको सामने रखकर बोल रहे हैं, मुझे नहीं। मैं किसी चीज़ को नहीं बदल सकता। अगर मैं कोशिश भी करूँ तो वे मेरा मज़ाक उड़ाकर मुझे गाँव से बाहर निकाल देंगे। आप मुझे नौकरी दे दें, इस प्रकार मुझे आप जीवनदान देंगे।"

मैंने व्यर्थ समय गँवाना ठीक न समझा। पूछने पर उसने अपना नाम श्रीनिवासन बताया। मैंने उसे अगले दिन मिलने को कहा। मैं अधिक देर समुद्र-तट पर न बैठ सका। मुझे अनुभव हुआ कि किसी व्यक्ति के विचारों को बदलना कितना कठिन है।

अगले दिन व्यस्त रहने के बावजूद भी मैं श्रीनिवासन को न भूल सका। परन्तु वह नहीं आया। मुझे आशंका हुई, कहीं उसने समुद्र में कूदकर आत्म-हत्या तो नहीं कर ली। दूसरे दिन इस सब के लिए मेरे पास समय नहीं था। मैं इसी उधेड़बुन में लगा था कि गाँवों की रूप-रेखा कैसे बदली जाए। जो कुछ मैंने किया था उसकी शाबाशी मुझे मिल गई थी, परन्तु मैं असन्तुष्ट था। जितना कुछ हमें करना है, उसको देखते हुए तो बहुत कम काम हुआ था।

× × ×

चिंगलपट से दस मील की दूरी पर मैं हरिजनों के मकानों की मरम्मत करवाने में लगा हुआ था। यह कार्य स्कूल के छात्रों के सहयोग से किया जा रहा था। सरकार ने भी दस हज़ार रुपए का अनुदान स्वीकार किया था। एकाएक मुझे एक तार मिला, जिसमें लिखा था—"गाँववाले आपके प्रोत्साहन के परिणामस्वरूप होनेवाले विकास-कार्य को नष्टभ्रष्ट करने पर उतारू हैं।" तार पर श्रीनिवासन के हस्ताक्षर थे। मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह श्रीनिवासन वही व्यक्ति होगा जिसे मैं महाबलीपुरम के समुद्र-तट पर मिला था। मैं शीघ्रता से उस गाँव की तरफ़ बढ़ा। रास्ते में मैंने खण्ड विकास अधिकारी सुलेमान को भी साथ ले लिया। उसने बताया कि झगड़ा चरागाह में नए पेड़ों को लगाने की योजना को लेकर शुरू हुआ है। दो गाँवों के निवासी अपनी भूमि की सीमाओं को लेकर झगड़ रहे हैं।

"लोगों के पास अगर कोई बेहतर

काम हो तो वे झगड़ें क्यों ? तुमने उनको किसी अच्छे काम में क्यों नहीं लगाए रखा ?" मैंने प्रश्न किया।

सुलेमान खामोश रहा, शायद वह कुछ कहते हुए हिचकिचा रहा था। अन्त में बोला—"मान्यवर, सराहणीय काम तो काफ़ी हुआ है। मुझे तो तब तक आपको बताने से मना किया गया था, जब तक यह काम समाप्त न हो जाए। उन नवयुवकों ने जो अपने आप को कर्म सेवक कहते हैं, ६ गाँवों का नकशा ही बदल दिया है।"

"मुझे कुछ और भी बताओ", मैंने उसे प्रोत्साहन दिया।

"श्रीनिवासन नाम का एक नवयुवक जिसे नौकरी नहीं मिली, घर लौट आया है और अपने घरवालों के सहयोग से दिन-रात परिश्रम करके उसने अपने पारिवारिक घर का पुनर्निर्माण कर लिया है", सुलेमान ने मुझे बताया।

"कुछ दिन काम करके हर परिवार अपने मकान का ढाँचा तो बदल ही सकता है, दुख तो इस बात का है कि यह लोग इस चीज़ को महसूस ही नहीं करते।"

"साहब ! कम से कम इन गाँवों में तो लोग इस चीज़ को महसूस करने लगे हैं। श्रीनिवासन ने इन सब को काम करने के लिए प्रोत्साहित किया और लोगों ने अपने घरों की दीवारें ऊँची कर ली हैं, छतों पर खपरैलें डाल ली हैं और कमरों में खिड़कियाँ बना ली हैं। यह सब चमत्कार उन्होंने केवल अपने परिश्रम से किया है। श्रीनिवासन गाँव का और अन्य गाँवों के उन ६ नवयुवकों का, जो अपने खाली समय को अपने घरों और खेतों को सुधारने में लगाते हैं, नेता बन गया है।"

मैंने सुख की साँस ली। आखिरकार कोई इन्सान तो ऐसा नज़र आया जिसने अपने विश्वास और परिश्रम से गाँववालों को इस बात का आभास कराया कि मेहनत ही उनकी सबसे बड़ी दौलत है। मैं यह सब देखने के लिए बेचैन था, लेकिन मुझे उस जगह पहुँचने की जल्दी थी जहाँ दोनों गाँवों के लोग अपनी गोचर भूमियों की सीमाओं का फैसला करने के लिए आमने-सामने डटे खड़े थे। उस जगह पहुँच कर मैंने जो दृश्य देखा, उसको देखकर मैं हैरान रह गया। दोनों तरफ़ आमने-सामने सैंकड़ों देहाती खड़े हुए थे। एक पक्ष वालों के पास फावड़े थे और वे वृक्षारोपण के लिए तैयार खड़े थे। दूसरे पक्ष वाले भी लाठियों से लैस थे और वृक्षारोपण रोकने के लिए सब कुछ कर डालने को तैयार नज़र आते थे। दोनों दलों के बीच में खाकी वर्दियाँ पहने दस नौजवान खड़े थे जिनको खदेड़े बिना दोनों दलों में भिड़न्त होना असम्भव था। ज्यों ही मैं वहाँ पहुँचा, उन नवयुवकों ने मेरी जय का नारा लगाया। मेरे बोलने से पहले ही गाँववालों ने भी उनका अनुसरण किया। मैंने कहना शुरू किया—"मैं दृढ़ता से यह कह सकता हूँ कि जितना काम आप लोगों ने किया है, उतना काम देश में शायद ही कहीं और हुआ हो। लेकिन अगर कुछ गज़ भूमि के लिए आप लड़ मरते हैं, तो सब कुछ किया-कराया चौपट हो जाएगा। जो नवयुवक और लोगों के सामने उदाहरण रखते हैं, वे महान् नेताओं की तरह ही हैं क्योंकि उन्हें अपने पर विश्वास था और उस विश्वास से ही उन्होंने और लोगों में भी विश्वास पैदा कर दिया। हर गाँव, हर ज़िले और हर राज्य में ऐसे आदमी होने चाहिएँ जो अपने विश्वास और सेवा से इस देश का रंगरूप बदल कर इसे शक्तिशाली बनाएँ।"

मुझे पता चला कि अब तक दोनों गाँवों की गोचर-भूमियों की सीमा निर्धारित नहीं की गई थी। जिस भूमि के टुकड़े को लेकर इतना बवंडर उठ खड़ा हुआ था, वह दोनों गाँवों के नकशों में दिखाया गया था। दोनों नकशों में से एक अवश्य ही ग़लत था। दोनों गाँववाले अपने-अपने नकशे को ठीक बताते थे। मैंने कोई ऐसा सुराग़ लगाने की कोशिश की जिससे एक नकशे को ठीक सिद्ध किया जा सके, लेकिन मुझे ऐसा कोई सुराग़ नहीं मिला। गाँववालों की उत्तेजना हर क्षण बढ़ती जाती थी—शायद वे समझते थे कि अपने शोर से वे अपने गाँव के नकशे को ठीक साबित करने में सफल होंगे। श्रीनिवासन मेरे पास आया और उसने कुछ बोलने की अनुमति माँगी। मैंने उसे बोलने की अनुमति सहर्ष दे दी। उसने बोलना आरम्भ किया। उसके स्वर में आत्म-विश्वास था—

"हमने पिछले तीन महीनों में अपने गाँवों में कर्मयोग का अभ्यास किया है जिसके फलस्वरूप हमारे मकानों में सुधार हो गया है और खेती से होनेवाली उपज में भी वृद्धि हुई है। क्या हमें यह सब केवल कुछ गज़ भूमि के लिए मिट्टी में मिला देना चाहिए।" भीड़ में से किसी की आवाज़ आई—"तो क्यों नहीं तुम अपने गाँव कोलाथूर वालों को ही समझाते कि वे झगड़ा छोड़ दें।" श्रीनिवासन ने कहना जारी रखा—"मैं अपने गाँववालों से ही अपील कर रहा हूँ। उन्होंने सदा ही मुझ से सलाह लेकर मेरा आदर किया है।" लेकिन कोलाथूर वाले भी टस से मस न हुए—"हम क्यों इस भूमि को छोड़ दें। इस पर हमारे बाप-दादा का अधिकार था और हमारे बच्चों का अधिकार भी रहना ही चाहिए। तुमने हमारे रहने और काम करने के तरीकों को बदल दिया है, इस लिए हमें अब और अधिक गोचर भूमि की आवश्यकता है।"

अब श्रीनिवासन ने दोनों गाँववालों से मेरी तरफ़ से अपील की—"कलक्टर साहब हम सब के पिता तुल्य हैं। वह

[शेष पृष्ठ ३० पर]

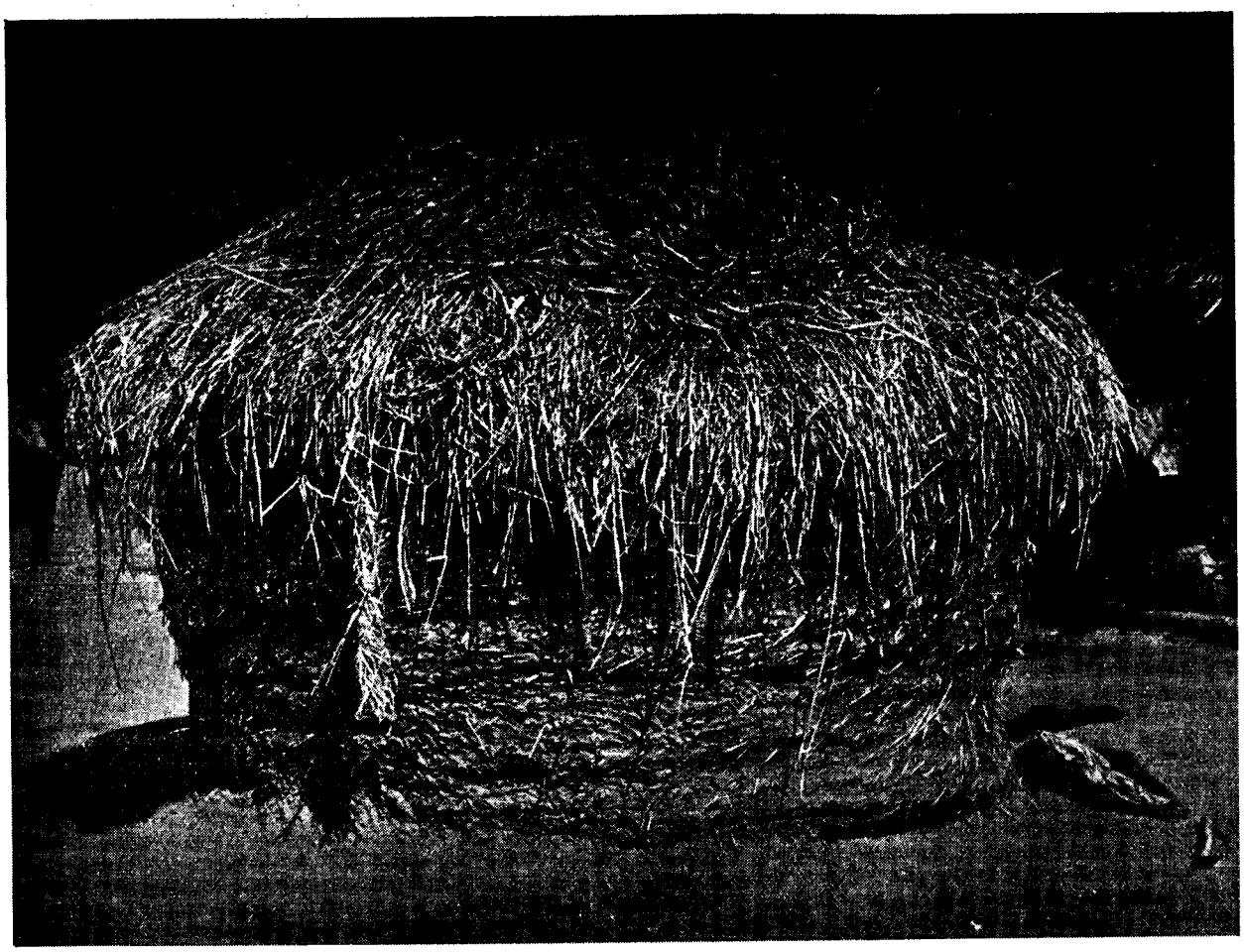

हैदराबाद के एक गाँव में अनाज संग्रह करने की एक खत्ती

अनाज का उचित संग्रह

के० आर० सोन्ताक

किसी भी खाद्य पदार्थ के उचित संग्रह के लिए अच्छे भंडार का होना आवश्यक है। कीड़ों तथा चूहों की रोकथाम के लिए अनेक आधुनिक साधनों के होते हुए भी यदि अनाज के गोदामों की बनावट ठीक न हो तो अनाज को खराब होने से रोकने के आधुनिक तरीके काम नहीं दे सकते।

हमारे देश में अधिकतर अनाज बोरों में या खुले ढेर के रूप में संगृहीत किया जाता है। बोरे रखने के गोदाम में यह देखना आवश्यक है कि उसका फर्श पक्का, सीमेंट का और सूखा हो। इस प्रकार के फर्श में चूहे छेद नहीं कर सकते और नमी के कारण अनाज भी खराब नहीं होता। पक्की दीवारों और साफ़ सतह होने से कीड़ों को छिपने के लिये कोई जगह नहीं मिलती। पर्याप्त मात्रा में रोशनी तथा हवा के आने-जाने के लिए रोशनदानों का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। गन्दे, अँधेरे और सीलवाले गोदाम में कीड़े तेज़ी से बढ़ते हैं और अधिक हानि करते हैं। फर्श ज़मीन से काफ़ी ऊँचा होना चाहिए। यदि फर्श काफ़ी ऊँचा न हो और छत से पानी टपकता हो तो एक बार की भारी वर्षा में इतनी हानि हो जाती है जितनी कि चूहों तथा कीड़ों से एक वर्ष में भी नहीं हो पाती। बोरों की थपियाँ दीवारों से तथा एक दूसरी थपी से डेढ़ से दो फुट का अन्तर देकर लगानी

चाहिए ताकि समय-समय पर जाँच-पड़ताल की जा सके और अनाज के बोरों पर सुविधा से दवा डाली जा सके।

ढेर के रूप में अनाज को संगृहीत करने के लिए पक्की खत्ती या तो ज़मीन के अन्दर या ऊपर या कोठे के रूप में होनी चाहिए। ज़मीन के अन्दर की खत्तियाँ साधारणतया दो-तिहाई ज़मीन के नीचे और एक तिहाई ऊपर होती हैं और उनमें ७५० से १,००० मन तक अनाज रखा जा सकता है। छत के बीच में एक खुला मुँह होता है, जिसमें से अनाज रखा और निकाला जाता है। इस पर धातु या सीमेंट का ढकना होता है। ज़मीन के ऊपर की खत्तियाँ सीमेंट या ईंटों की होती हैं और पक्की नींव वाली ज़मीन से ३ फुट ऊँची चौकी पर बनाई जाती हैं। इसमें एक ही दरवाज़ा होता है, जिसके ऊपर एक खिड़की होती है और उसको बन्द करने के लिए जमके लगनेवाला लकड़ी का ढकना होता है। दरवाज़े पर एक लकड़ी का ढाँचा होता है जिसमें तख्ते लगाने का प्रबन्ध रहता है। फर्श पर चटाई रख कर अनाज डाला जाता है और जब भरने लगता है तो दरवाज़े के ढाँचे में तख्ते लगा दिए जाते हैं। जब अनाज की सतह दरवाज़े तक ऊँची पहुँच जाती है तो उसे ऊपरी खिड़की में से डाला जाता है। कोठे और खत्तियों में भाप की दवाई का उपयोग करना सरल होता है।

अनाज को लम्बे समय तक भर कर रखना हो तो खुले ढेर के रूप में ही उचित होता है। चूहों के कारण नुकसान भी नहीं हो पाता, और यदि अनाज पहले से ही सूखा हो तो नमी के कारण भी हानि नहीं हो पाती। इसके अतिरिक्त भाप की दवा सरलता से डाली जा सकती है।

अन्न भंडार की बनावट ठीक प्रकार की होने से चूहों की रोक-थाम सरल हो जाती है। अनाज को नुकसान पहुँचाने वाले चूहे तीन प्रकार के होते हैं। काला चूहा, भूरा चूहा और घरेलू चूहा। एक सौ चूहे एक वर्ष में २७ मन अनाज खा सकते हैं। वे जितना अनाज खा जाते हैं उसकी तो हानि होती ही है, उससे अधिक मात्रा में वे अनाज को खराब कर देते हैं। अनुमान है कि वे जितना खाते हैं उससे ८-१० गुना अनाज खराब कर देते हैं। चूहों की पैदाइश भी बहुत होती है। यह हिसाब लगाया गया है कि चूहों का एक जोड़ा वर्ष में ८०० बच्चे पैदा कर सकता है।

अनाज को चूहों से बचाने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि गोदाम की बनावट ऐसी हो कि उसमें चूहे प्रवेश न कर सकें। यदि गोदाम का फर्श पक्की सीमेंट का हो और दरवाज़े के निचले ६ ईंच के भाग में टीन की चादर लगाई जाए और दरवाज़े को जुटा हुआ बनाया जाए तो चूहों से बचाव सरलता से किया जा सकता है। दूसरे, खिड़कियाँ ३ फुट की ऊँचाई पर होनी चाहिएँ और खिड़कियों के निचले भाग की दीवारों की सतह भी एक सी होनी चाहिए।

चूहों को मारने के लिए अनेक प्रकार के विष हैं। सर्वोत्तम विष 'ज़िंक फास्फाइड' है। यह थोड़े से अनाज में, आटे या बेसन में, या बासी रोटी को गीला करके उसमें मिलाया जाता है। इसे पाँच प्रतिशत के हिसाब से ऊपरी पदार्थों में मिलाना चाहिए। विष से मिले हुए ये पदार्थ चहों के आने-जाने के रास्ते में तथा उनके बिलों के समीप रख देने चाहिएँ। चूहे बहुत ही शक्की होते हैं, इसलिए पहले २-३ दिन खाने के सादे पदार्थ रखने चाहिएँ और जब वे उन्हें खाना शुरू कर दें तब विष मिलाकर रखने चाहिएँ।

चूहों के मारने का एक और तरीका यह है कि उनके बिलों को शीशे के छोटे-छोटे टुकड़ों से मिले हुए सीमेंट से बन्द कर देना चाहिए। ज्यों ही चूहे बाहर आने का प्रयत्न करेंगे उनके पैर शीशे के कारण छलनी हो जाएँगे और वे बाहर आने में असफल रहेंगे।

चूहे मारने का तीसरा तरीका यह है कि उनके बिल

अनाज संग्रह करने की एक अन्य खत्ती

में चमचे से 'साइनों ग़ैस' नामक विष डाल कर उन्हें मिट्टी से बन्द कर देना चाहिए। सील के कारण इस विष में से हाइड्रो-साइनिक एसिड गैस निकलती है, जो चूहों को नष्ट कर देती है।

व्यापारिक संग्रह के मुकाबले में ग्रामीण संग्रह में हानि की मात्रा कम होती है। किसान इस बात पर बहुत ध्यान देता है कि अनाज के संग्रह करने से पहले उसे भली प्रकार सुखा लिया जाए।

गेहूँ, धान, ज्वार आदि का संग्रह भरोता, ढोली, कंगी, गोला और कठोरी नामक ढाँचे में किया जाता है। ये ऊँची चौकी पर बनाए जाते हैं और इनकी निचली सतह और बाजुओं में भूसा तथा तिनकों की तह लगाकर उसमें अनाज भर दिया जाता है और फिर ऊपर भी भूसे और तिनकों की तह लगाकर मिट्टी लीप दी जाती है। इसकी छत घास या सूखे पत्तों की होती है और बहुत ढलवाँ होती है, ताकि वर्षा का पानी जल्दी नीचे बह जाए। यदि कीड़ों द्वारा कोई हानि होती भी है तो वह अनाज के ऊपरी भाग में कुछ इंचों तक ही सीमित रहती है। वर्षा ऋतु के बाद शीघ्र ही पर्याप्त मात्रा में भाप की दवा डालने से कोई भी हानि नहीं होती।

एक और तरीका जो भारत के कुछ भागों में प्रचलित है, यह है कि अनाज को ज़मीन में बनाए हुए कच्चे गड्ढों में संगृहीत किया जाता है। इन्हें उत्तर प्रदेश में खत्ती और बम्बई, हैदराबाद और मध्य प्रदेश में पैव कहते हैं। खत्तियों में आम तौर पर गेहूँ और पैव में ज्वार भरी जाती है। नीचे की सतह पर और बाजुओं में भूसे की या तिनकों की तह लगाई जाती है और अनाज के ऊपर भी भूसे की तह जमा कर मुँह बंद कर दिया जाता है। इन में कीड़ों से कोई हानि नहीं होती, परन्तु नमी के कारण अनाज की बाहरी सतह में कुछ नुकसान होता है। अनाज की इस हानि को बचाने के लिए भूसे आदि की तह काफी मोटी होनी चाहिए और तह के भीतरी भाग में बाँस की चटाई रख देनी चाहिए ताकि अनाज नमी के सम्पर्क में न आए।

आज भारत अनाज के मामले में आत्म-निर्भर है। यह भारत सरकार के 'अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन का फल है। परन्तु 'अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन 'अनाज सुरक्षा' आन्दोलन से पृथक नहीं किया जा सकता। देश की बढ़ती हुई जन संख्या के साथ खाद्य समस्या हमेशा महत्वपूर्ण रहेगी और भारत में खाद्य पदार्थों की मात्रा बढ़ाने के लिए सर्वोत्तम उपाय यह है कि उनको हर प्रकार की हानि से बचाएँ। यह अनाज का कारोबार करनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

समानता !

हमारी माहिलाएँ सदा तत्पर रहती हैं:-
सरकार चलाने के लिए -
जनता का नेतृत्व करन के लिए -
पुलिस मे नौकरी करने के लिए -
हवाई प्रतियोगिताओं मे भाग लेने के लिए-
-Samuel-
निशाने बाजी में पुरस्कार जीतने के लिए-
परन्तु गाँवो मे काम करने के
लिए - नहीं, कभी नहीं''

नया प्रभात आ रहा !

प्रयागनारायण त्रिपाठी

नया प्रभात आ रहा, नया प्रकाश आ रहा,
नया विकास आ रहा, नया विकास आ रहा।

नयी धरा सँवारती, नये प्रभात की किरन,
नयी समृद्धि वारती, नये प्रकाश की किरन।

उठे नये सहस्र भुज, उठे नये सहस्र जन,
जगे नये-नये स्वजन, जगे नये-नये सपन।

घनांधकार मिट चला, मदांधता सिमट चली,
समत्त्व, स्नेह, शान्ति की, खिली कल गली-गली।

नया-नया वनांत है, प्रसन्न है, प्रशान्त है,
नया-नया दिनांत है, अनिंद्य है, अक्लान्त है।

नये-नये विहंग हैं, नये-नये सुगीत हैं,
नयी-नयी उमंग है, नयी सुरीति, प्रीत है।

उठो, सभी, उठो, बढ़ो, नये संदेश को पढ़ो,
नये सुशृंग पर चढ़ो, नये स्वदेश को गढ़ो !!

पाँवता का पुस्तकालय और सूचना केन्द्र

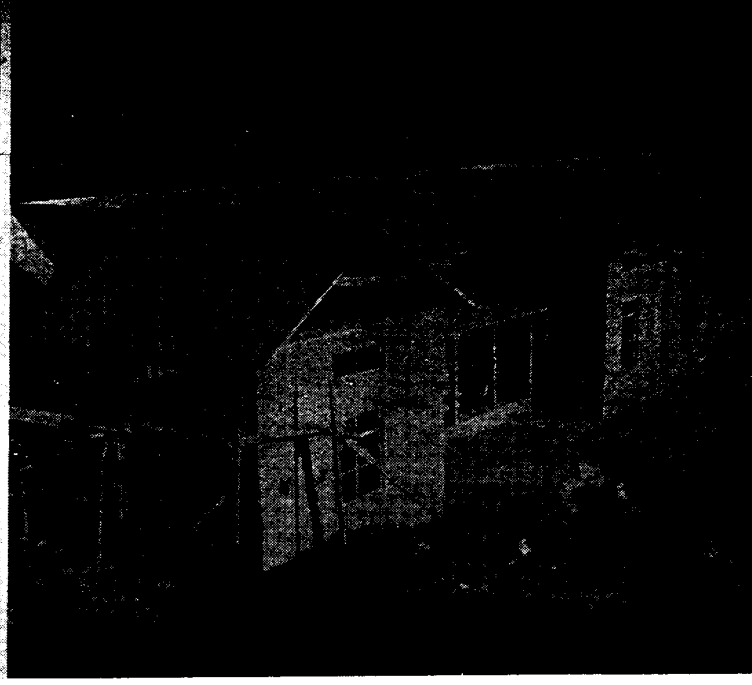

स्वसहायता द्वारा निर्मित एक स्कूल भवन

थ्योग में एक किसान मेला

बहल विकास खण्ड में सड़क निर्माण

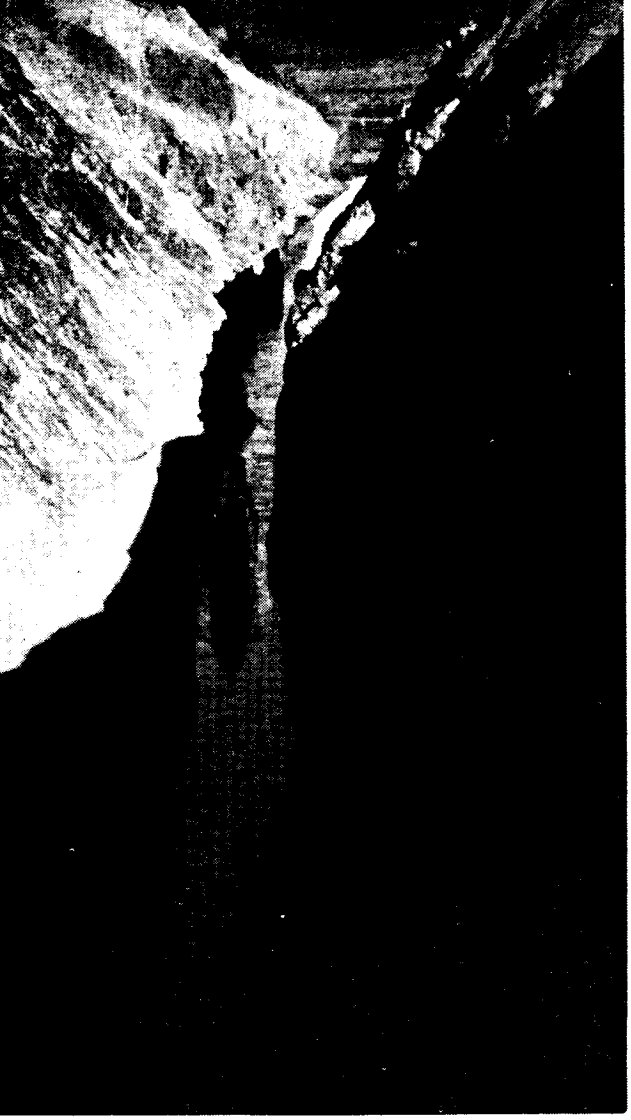

लुशाई के पर्वतीय क्षेत्र में चट्टानें तोड़ी जा रही हैं

लुशाई के इन बीहड़ क्षेत्रों में भी योजना-कार्य प्रगति पथ पर अग्रसर है

लुशाई के दुर्गम क्षेत्र में चट्टानें तोड़ने

गोवर्धनयोजना-क्षेत्र, मथुरा में महिलाएँ खिलौने बनाना सीख रही हैं

सामुदायिक योजनाओं की प्रगति

गोवर्धन योजना-क्षेत्र, मथुरा में महिलाओं को निवाड़ और क़ालीन बुनना भी सिखाया जाता है

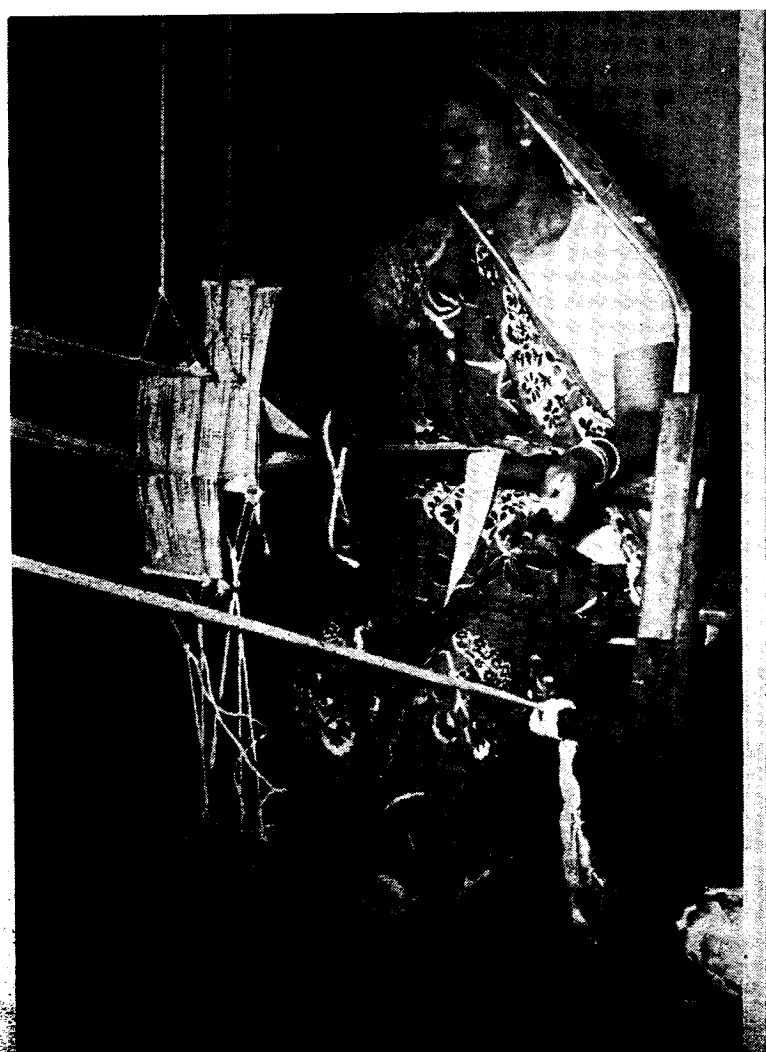

[illegible] विकास खण्ड में [illegible] गाँव का [illegible]

[illegible] के [illegible] अस्पताल में एक नया कक्ष

[illegible] विकास खण्ड, [illegible] में ग्रामवासियों द्वारा श्रमदान

[illegible] विकास खंड के [illegible] गाँव में एक नया नल-कूप

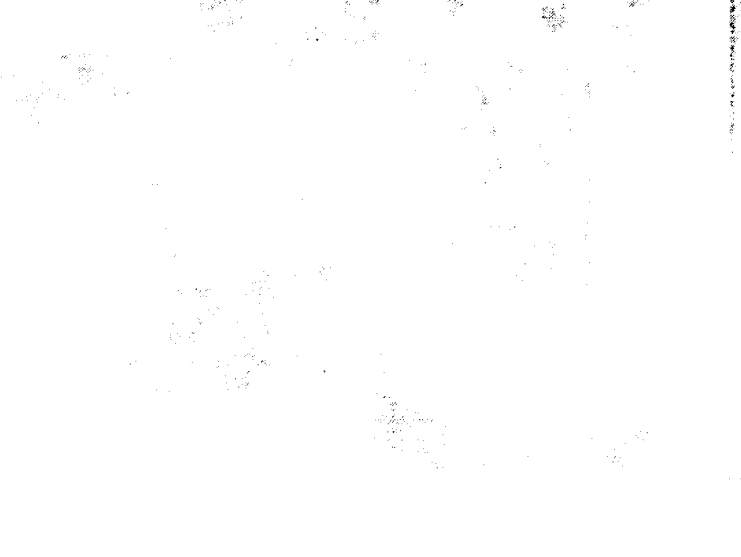

सामुदायिक योजनाएं

विकास कार्य में सेवा-निवृत्त रेलवे गार्ड सरदार हरनामसिंह का उत्साह युवकों के लिए प्रेरणा का एक अजस्र स्रोत है

विकास का प्रतीक : बटाला

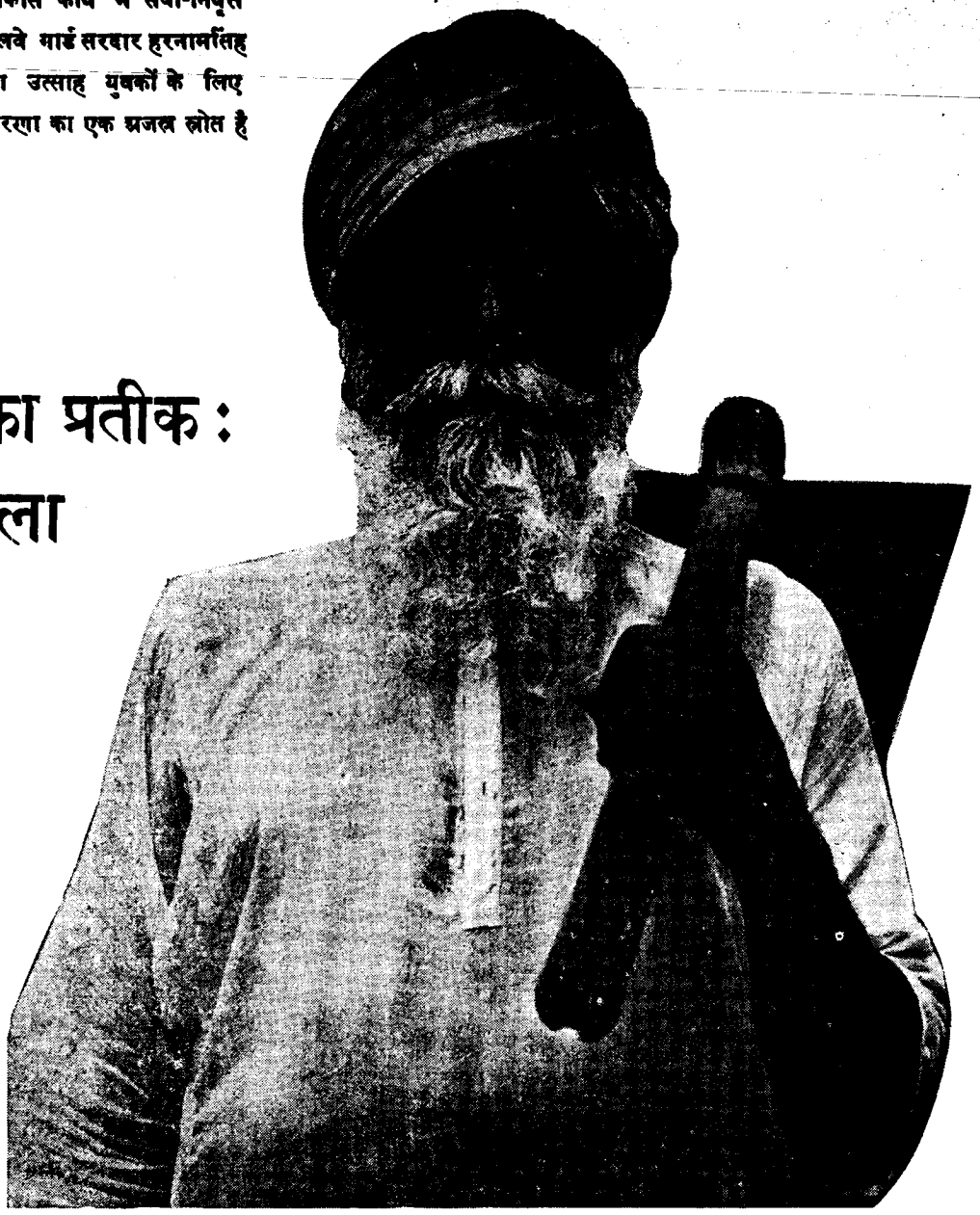

बटाला सामुदायिक योजना क्षेत्र के ३ विकास खण्डों के अन्तर्गत समूची बटाला तहसील आ जाती है। इस योजना क्षेत्र की कुल जन संख्या लगभग साढ़े तीन लाख है और करीब ५०० गाँव इससे लाभान्वित हो रहे हैं। केन्द्रीय विकास खण्ड का प्रधान कार्यालय बटाला में ही है और शेष दो खण्डों के प्रधान कार्यालय श्री हरगोविन्दपुर और डेरा बाबा नानक में हैं।

बटाला योजना क्षेत्र में आबादी काफ़ी घनी है और भूमि छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटी हुई है, किसी-किसी किसान के पास तो एक एकड़ से भी कम भूमि है।

बटाला योजना क्षेत्र की यात्रा करनेवाले प्रत्येक यात्री को जो चीज़ सर्वप्रथम प्रभावित करती है, वह वहाँ की उन्नत सड़कें हैं। इस क्षेत्र के अनेक गाँव वर्षा के दिनों में शेष संसार से कट जाते थे। अनेक गाँवों को कस्बे से मिलानेवाली कोई सड़क न थी। गाँवों का आपस में भी कोई विशेष सम्पर्क न था। वर्षा में अनेक नदी-नाले उफ़न पड़ते थे और यातायात प्रायः ठप्प हो जाता था। सामुदायिक योजना अधिकारियों ने इस ओर विशेष ध्यान दिया। अनेक निकासी नालियाँ बनाई गईं। कई नालों पर बाँध और पुल बाँधे गए। इससे वर्षा के फालतू पानी का उपयोग भी होने लगा और वर्षा के दिनों में यातायात भी सरल हो गया। अनेक नई सड़कें बनाई गईं। अब ऐसे गाँवों की संख्या कम नहीं है जहाँ बसें और बड़ी मोटरें भी जा सकती हैं। इससे गाँवों में अपराधों की संख्या बहुत कम हो गई है। गाँवों

का आपसी तालमेल भी बढ़ रहा है। और यह सब श्रम दान और स्व-सहायता का परिणाम है। अनेक गाँवों के चारों ओर गोल सड़कें बनाई गई हैं। अब किसी भी दिशा से गाँव पहुँचा जा सकता है। इन सड़कों के किनारे गड्ढे खोद कर खाद की समुचित व्यवस्था की गई है।

आदर्श फार्मों के अतिरिक्त, शायद ही कोई गाँव ऐसा हो जहाँ प्रदर्शन प्लाट न हों। किसान भी नए औज़ारों और खेती के नए तरीकों को अपना कर अपनी काया पलट करने के लिए प्रयत्नशील दिखाई देते हैं। नए तरीकों और नए औज़ारों के प्रति पहले जो उदासीनता थी उसका स्थान अब उत्साह और उमंग ने ले लिया है। अनेक स्थानों में नलकूप और पम्पिंग सैट लगाए जा रहे हैं। धान बोने में जापानी तरीके का प्रचार बढ़ रहा है। अमेरिकन कपास की खेती में भी वृद्धि हो रही है। बिजली के आ जाने से सिंचाई की समस्या बहुत कुछ सुलझ जाएगी।

सिंचाई और खेती-बाड़ी के अतिरिक्त गाँवों के सर्वतोमुखी विकास की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। दाइयों के प्रशिक्षण की विशेष व्यवस्था की जा रही है ताकि प्रत्येक गाँव में कम से कम एक प्रशिक्षित दाई की सेवाएँ तो उपलब्ध हों ही। हस्पतालों के निर्माण के प्रति जनता में उत्साह है। श्री हरगोविन्दपुर विकास खण्ड के माँड गाँव का हस्पताल इसका शानदार उदाहरण है। मुर्गों की नसल सुधारने की दिशा में भी काफी प्रगति की गई है। कोटला नवाब गाँव के सरदार बिशनसिंह जब अपनी 'रोड आइलैण्ड' मुर्गियों को अपने घर के बाहर चुगाते हैं तो उनका सीना गर्व से फूल उठता है। मलेरिया नियंत्रण की गति देख कर तो यह आशा बँधती है कि वह दिन दूर नहीं है जब यह क्षेत्र पूर्णतः ज्वर उन्मुक्त हो जाएगा। उद्योग-धन्धे सिखलाने की दिशा में भी पग उठाया जा चुका है।

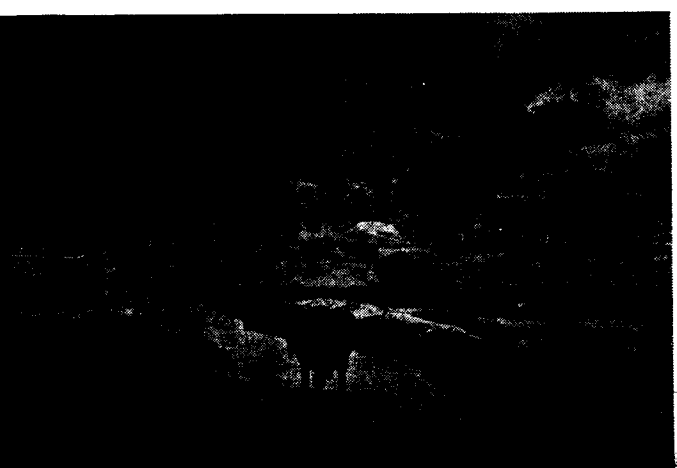

शिक्षा की ओर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है। ऊधोवाल गाँव में गाँववालों ने अपने श्रम से एक स्कूल का निर्माण किया है जिसके साथ खेलने का मैदान भी है। स्कूल के मैदान में बच्चों को खेलता देखकर किसानों के चेहरों पर प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है। अब उन्हें यह चिन्ता नहीं है कि शिक्षा के लिए बच्चों को शहर भेजना पड़ेगा और अत्यधिक खर्च का बोझ उठाना पड़ेगा।

समस्त योजना क्षेत्र में उत्साह की एक नई लहर व्याप्त नज़र आती है। जवानों और लड़कों में ही नहीं बूढ़ों तक में यह नवीन उत्साह दिखाई पड़ता है। सरदार हरनामसिंह एक सेवा-निवृत्त रेलवे गार्ड हैं। सामुदायिक विकास खण्ड में सरदार हरनामसिंह

सक्रिय अभिरुचि लेते हैं। गाँव के विकास के लिए इस वृद्ध अवस्था में भी सरदार हरनामसिंह को फावड़ा कँधे पर रखे देख कर क्षेत्र के उज्ज्वल भविष्य के बारे में सन्देह की गुंजायश तक नहीं रहती।

यह इस क्षेत्र का सौभाग्य है कि इसे बहुत ही कुशल और अनुभवी अधिकारी मिले हैं। बटाला के प्रधान कार्यालय में ग्राम सेवकों और विकास अधिकारियों की नियमित बैठकें होती हैं जहाँ ग्राम सेवक अपनी समस्याओं के बारे में विचार-विनिमय करते हैं।

यद्यपि अभी बहुत काम बाकी है, परन्तु प्रारम्भ बहुत ही अच्छा हुआ है। अब गाँव पहले की अपेक्षा अधिक साफ़-सुथरे दिखाई पड़ते हैं। गाँवों का आपसी संपर्क बढ़ रहा है। प्रत्येक गाँव में कुछ ऐसे किसान अवश्य मिल जाएँगे जो नवीन औज़ारों और उन्नत तरीकों को अपना कर अपनी पिछड़ी दशा सुधारने के लिए प्रयत्नशील हैं। अब गाँववाले स्वयं को अपने भाग्य का निर्माता समझने लगे हैं जो एक बहुत शुभ लक्षण है। जनता में उत्साह है। क्या बूढ़े, क्या जवान, सभी में एक लगन है। यदि जनता के इस उत्साह को ठंडा न पड़ने दिया गया, तो वह दिन दूर नहीं जब समस्त तहसील एक नवीन जीवन से स्पन्दित हो उठेगी।

★

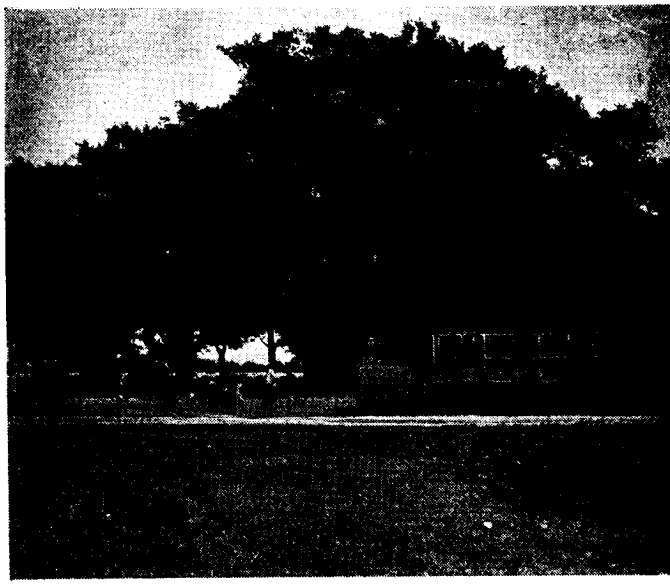

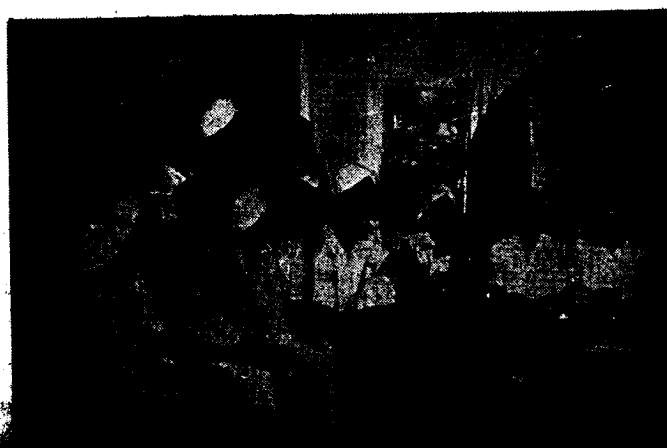

बाईं ओर ऊपर के चित्र में गाँववाले एक सड़क बना रहे हैं, बीच के चित्र में वह पुल है जिसके कारण सारे वर्ष गाँव से सम्पर्क बना रहता है और नीचे के चित्र में ६ मील लम्बी वह निकासी-नाली है जिसे २० हज़ार गाँववालों ने बनाया है। बाईं ओर ऊपर के चित्र में सरदार बिशन सिंह अपनी 'रोड आईलैण्ड' मुर्गियों को चुगा रहे हैं, बीच में ऊधोवाल गाँव का स्कूल भवन है और नीचे बटाला सामुदायिक योजना के प्रधान कार्यालय में विकास कर्मचारियों की एक सभा हो रही है

एक नया प्रयोग

एन० ई० एस० राघवाचारी

अगस्त १९५५ के मध्य की बात है। एक दिन कृषि और सामुदायिक विकास के मन्त्री ने मुझे और मेरे साथी श्री वेंकटचेलापति, निर्देशक ग्राम-कल्याण को बुलाया और कहने लगे—"गान्धी जयन्ती दिवस को प्रधान मन्त्री मद्रास में होंगे। यह बड़ा अच्छा हो यदि हम गाँवों की प्रतियोगिता का आयोजन करें और प्रधान मन्त्री से प्रार्थना करें कि वह श्रेष्ठतम गाँवों को पुरस्कार प्रदान करें।" हम दोनों एक क्षण के लिये मौन रह गए। यद्यपि यह विचार सुन्दर था परन्तु भय यह था कि इतने कम समय में हम यह सब कर भी सकेंगे। प्रधान मन्त्री द्वारा इस प्रकार के पुरस्कारों के वितरण के मनोवैज्ञानिक महत्व से हम भली भाँति परिचित थे। एक क्षण बाद हमने कहा-"हाँ, हम कर सकते हैं।"

श्रेष्ठतम गाँव को पुरस्कार देने की सूझ कोई बिलकुल नई नहीं थी। मई १९५३ में विकास कमिश्नरों का तीसरा वार्षिक सम्मेलन उदकमंडलम् में हुआ था और उसमें इस प्रश्न पर विचार किया गया था कि गाँवों को प्रोत्साहन देने के लिए प्रति वर्ष श्रेष्ठतम गाँवों को पुरस्कार दिए जाएँ। मद्रास सरकार ने इन सिफारिशों को स्वीकार कर लिया था और पुरस्कारों की स्वीकृति की आज्ञाएँ जारी कर दी थीं। परन्तु गाँवों को पुरस्कार देने का मापदण्ड अभी निश्चित किया जाना था।

सामुदायिक विकास के नाम में ही समस्त समुदाय द्वारा श्रम की बात निहित है। यह निश्चित रूप से जनता का कार्यक्रम है, जनता द्वारा आयोजित किया जाता है और जनता द्वारा ही कार्यान्वित किया जाता है। सरकार तो प्रशासकीय और टेकनीकल सहायता तथा वित्त का एक अंश ही उपलब्ध करती है। क्षेत्र विशेष की जनता कार्यक्रम को कार्यान्वित करने और बनाने में जितनी रुचि लेगी, उतना ही कार्यक्रम सफल होगा। यह एक सुपरिचित तथ्य है कि अनेक गाँवों ने इस बात को भली भाँति समझा है और इससे लाभ भी उठाया है। पुरस्कार देने का उद्देश्य किसी गाँव को पुरस्कृत करना ही नहीं है, बल्कि अन्य गाँवों में भी जीवन फूँकना है। क्योंकि विभिन्न खण्डों में विभिन्न तारीखों पर कार्य शुरू हुआ था, इस कारण विभिन्न खण्डों के गाँवों को लेकर निर्णय करना कठिन था। परन्तु एक ही खण्ड के कई गाँवों को लेकर निर्णय करना अपेक्षाकृत सरल था।

परन्तु तो भी कार्य इतना सरल नहीं था। श्रेष्ठतम गाँव चुनने के लिए ज़िला कलेक्टरों को निम्नलिखित आदेश दिए गए—

१. नकदी या वस्तु के रूप में गाँव का योगदान, २. विभिन्न कार्यों और कार्यक्रम को मूर्त रूप देने में सहयोग, ३. गाँवों की सफ़ाई, ४. सामुदायिक श्रम, ५. गाँव के संगठन और उनकी सेवाओं की कार्यकुशलता, ६. कृषि-उत्पादन में वृद्धि के लिए नवीन तरीकों को अपनाना, ७. खादी और ग्रामोद्योग, ८. अस्पृश्यता निवारण और हरिजनों का सहयोग, और ९. विशेष सफलता का कोई अन्य कार्य।

इन विशेषताओं के अतिरिक्त, ऐसा भी देखने में आया कि एक ही खण्ड के दो गाँव पुरस्कार के लिए समान रूप से दावेदार थे। ऐसे मामले में निर्णायक अधिकारी का कार्य सरल न था। परन्तु स्वयं जाकर स्थिति का निरीक्षण करने के उपरान्त निर्णय करने में उन्हें कोई विशेष कठिनाई न हुई।

२ अक्तूबर, १९५५ को श्रेष्ठतम गाँवों के लगभग ६० प्रतिनिधि फोर्ट सेंट जार्ज, मद्रास में एकत्र हुए। सामुदायिक विकास कार्यक्रम के इन सम्मानित व्यक्तियों का मद्रास में अपूर्व सम्मान हुआ। जब कि प्रधान मंत्री का भाषण सुनने के लिए लाखों आदमी फोर्ट से बाहर खड़े थे, केवल इन लोगों को ही सम्मानित व्यक्तियों के साथ फोर्ट के भीतर जाने की अनुमति मिली थी। फोर्ट में प्रधान मंत्री के आगमन पर इन लोगों का प्रधान मन्त्री से परिचय कराया गया। प्रधान मंत्री ने इन लोगों से कुछ देर बात-चीत की।

३ अक्तूबर, १९५५ को सचिवालय में एक विशेष सभा बुलाई गई और कृषि मंत्री ने इन ६० प्रतिनिधियों को प्रमाण-पत्र भेंट किए। प्रमाण-पत्र देते समय कृषि मंत्री ने यह घोषणा की कि निकट भविष्य में ही श्रेष्ठतम गाँव को एक राज्य-पुरस्कार भी दिया जाएगा। जिन लोगों को यहाँ पुरस्कार मिले हैं उन्हें चाहिए कि अपनी प्रगति की रफ्तार को धीमा न करें ताकि उन्हें राज्य-पुरस्कार भी मिल सके।

राज्य के प्रधान कार्यालय में समारोह समाप्त हुआ। गाँव पहुँचने पर इन प्रतिनिधियों का बड़े सम्मान के साथ स्वागत किया गया। समाचारपत्रों में यह समाचार पढ़ कर मैं काफी प्रसन्न हुआ। अपने दौरे पर मैंने कई गाँवों में देखा कि लोगों ने इन प्रमाण-पत्रों को सुन्दर फ्रेमों में जड़वा कर पंचायत-घरों या सामुदायिक केन्द्रों में टाँग रखा है।

प्रत्येक गाँव को योग्यता के एक प्रमाण-पत्र के साथ १,००० रुपया नक़द पुरस्कार भी दिया जाएगा। इस राशि का उपयोग गाँवों में सामुदायिक गति-विधि के लिए अतिरिक्त सुविधाएँ—सामुदायिक मनोरंजन केन्द्रों, बच्चों के बाग़, पुस्तकालय आदि के बनाने में किया जाएगा।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की दिशा में यह एक प्रयोग मात्र है। मुझे आशा है कि अन्य गाँवों को भी इससे प्रोत्साहन मिलेगा और स्वस्थ प्रतियोगिता के वातावरण में वे कार्यक्रम में और भी अधिक रुचि दिखाएँगे।

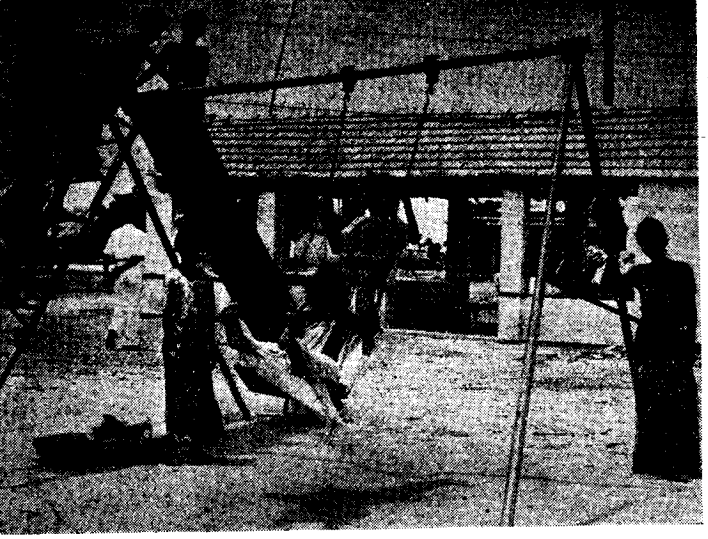

चिंगलपट विकास खण्ड के अन्तर्गत एक गाँव में बच्चों का बाग़

चिंगलपट के एक गाँव में गाँववालों के मध्य ग्राम सेवक

चिंगलपट में नया जीवन

चिंगलपट लौटने पर किसी भी व्यक्ति को सहसा विश्वास ही न होगा कि यह वही चिंगलपट है जहाँ से मैं कुछ दिन पूर्व गया था। सूखे, मरियल पशुओं को हाँकते क्षीणकाय किसानों के स्थान पर आज स्वस्थ ढोर और प्रफुल्ल किसान नज़र आते हैं। मरुभूमि जैसा दृश्य प्रस्तुत करनेवाले चिंगलपट प्रदेश में आज खेत लहलहा रहे हैं। और यह सब गत ३ वर्षों में हुआ है।

अक्तूबर १९५३ में यहाँ विकास खण्ड खोला गया जिसका प्रधान कार्यालय तिरुकलीकुन्द्रम में है। यद्यपि विकास की यह प्रेरणा बाहर से आई थी, परन्तु आज तो विकास के लिए गाँवों की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा देखते ही बनती है। ज़िले का प्रत्येक किसान अपने गाँव को समृद्ध बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

तिरुकलीकुन्द्रम को जानेवाली सड़क के किनारे निमाएल्ली एक छोटा-सा गाँव है। कुछ दिन पूर्व मद्रास के किसी कालेज के कुछ छात्र-छात्राओं ने यहाँ आकर श्रमदान द्वारा नए ढंग की कुछ झोपड़ियाँ बनाईं। गाँववालों में इससे उत्साह जगा। उन्होंने श्रमदान द्वारा कई मील लम्बी सड़क का निर्माण कर डाला। ऐसे ही एक अन्य गाँव में पहले किसान धान बोने की जापानी प्रणाली को अपनाते बहुत हिचकिचाते थे। परन्तु आज सभी ने उसको अपना लिया है और परिणामस्वरूप आज वे अधिक समृद्ध हैं। अब गाँव में एक सामुदायिक मनोरंजन कक्ष भी नज़र आने लगा है। एक बच्चों का बाग़ भी बन गया है जो बच्चों के शोर से सदा गूंजता रहता है।

महाबलीपुरम् इस विकास खण्ड का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। महाबलीपुरम् पहले इस कारण प्रसिद्ध था कि इसके सात पगोडे पल्लव कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। परन्तु अब महाबलीपुरम् के महत्व में सामुदायिक विकास कार्यक्रम ने और भी वृद्धि कर दी है। हाल में बने एक सामुदायिक हॉल और पुस्तकालय विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। महाबलीपुरम् के मछियारे अब एक सामुदायिक गाड़ी खरीदने की बात सोच रहे हैं ताकि वे अपनी मछलियाँ मद्रास के बाज़ारों में अच्छे भाव पर बेच सकें।

दो वर्ष की अल्पवधि में २६८ एकड़ भूमि में धान बोने की जापानी प्रणाली अपनाई गई, खाद के २,७५६ गड्ढे खोदे गए और २,३०५ मन उर्वरक और हरी खाद बाँटी गई। पशुओं का एक चिकित्सालय तथा कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र खोला गया। गाँवों की सफ़ाई की ओर विशेष ध्यान दिया गया। १,२४६ प्रौढ़ों को सामाजिक शिक्षा दी गई और ४३ सामान्य स्कूलों को बेसिक स्कूलों में परिवर्तित किया गया। अनेक नए स्कूल खोले गए। गाँववालों ने श्रमदान करके २४ मील लम्बी कच्ची सड़कें और ४ मील लम्बी पक्की सड़क बनाई।

देहाती उद्योग-धंधों को प्रोत्साहन दिया गया और सहकारी आन्दोलन से गाँवों की आर्थिक दशा सुधर रही है। ८ नई सहकारी समितियाँ खोली गईं और ६३ गाँवों में सहकारी आन्दोलन चलाया गया। अल्पकालीन ऋण दिए गए।

श्रम और भूमि के रूप में जनता ने पौने दो लाख रुपए का योगदान दिया जब कि सरकार का कुल व्यय लगभग सवा चार लाख रुपए है।

इस प्रकार आज चिंगलपट अपने श्रम द्वारा दरिद्रता और अज्ञान को दूर करने के महान् प्रयास का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।

न्यून्हैम दम्पति

अजीत गुप्त

कुछ महीने पहले की बात है। एक आस्ट्रेलियन दम्पत्ति श्री न्यून्हैम तथा श्रीमती न्यून्हैम पश्चिम बंगाल के देहात का निरीक्षण करने आए। श्री न्यून्हैम आस्ट्रेलिया के रेडियो विभाग से सम्बन्ध रखते हैं और श्रीमती न्यून्हैम एक स्कूल में अध्यापिका हैं। मैंने सोचा कि इन लोगों को बरुईपुर सामुदायिक विकास खण्ड का कोई गाँव दिखाना उपयुक्त रहेगा जहाँ कि सर्वतोमुखी विकास हो रहा है। दो वर्ष पूर्व इस गाँव में एक महिला समिति बनी थी। महिला समिति का कार्यालय एक सुन्दर झोंपड़ी में है जो गाँव के उद्योगों, चित्रकला और पोस्टरों के सुन्दर नमूनों से सुसज्जित है। दिन के ढाई-तीन बजे यहाँ रोज़ विभिन्न अवस्थाओं की १५-२० महिलाएँ शिक्षा और मनोरंजन के लिए एकत्र होती हैं। सदस्यों की संख्या ३० से अधिक है।

न्यून्हैम दम्पत्ति ने गाँव की महिलाओं से समिति की प्रायः प्रत्येक गति-विधि और उनके गार्हस्थ्य जीवन के बारे में अनेक प्रश्न पूछे। कुछ क्षणों तक तो गाँव की स्त्रियों में कोई उत्साह न जगा, परन्तु बाद में तो यह उत्साह एक दम बढ़ने लगा। उनके कंठों और उत्सुक आँखों ने एक सौहार्दपूर्ण वातावरण उत्पन्न कर दिया। ४० वर्षीय श्रीमती वसन्ती चक्रवर्ती ने विचार-विनिमय में दिल खोल कर भाग लिया। एक अन्य लड़की ने भी काफ़ी उत्साह दिखाया। "आप यहाँ किस समय आती हैं?" "आप यहाँ क्या करती हैं?" "इससे आपके जीवन में कोई परिवर्तन आया या नहीं?" ऐसे अनेक प्रश्नों का उन्होंने बड़े चाव से उत्तर दिया। यह उत्साह यहाँ तक बढ़ा कि ग्राम सेविका श्रीमती उमा मजुमदार के लिए इनके उत्तरों का अंग्रेज़ी रूपान्तर करना कठिन हो गया। न्यून्हैम दम्पत्ति अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने बताया कि वे रामनगर से बहुत प्रभावित हुए। रामनगर प्रथम भारतीय गाँव था जिसकी न्यून्हैम दम्पत्ति ने यात्रा की थी।

जब विचार विनिमय हो रहा था तो एक कोने से एक ६५ वर्षीय वृद्धा की काँपती हुई आवाज़ सुनाई दी। वह वृद्धा भी विदेशी महिला से बात-चीत करना चाहती थीं। मैंने उनकी प्रार्थना श्रीमती न्यून्हैम तक पहुँचा दी जिसे श्रीमती न्यून्हैम ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। झोंपड़ी में सभी की निगाहें उन वृद्धा की ओर लग गईं। हममें से अनेक का हृदय सशंकित था कि यह वृद्धा क्या बात-चीत करेंगी। श्रीमती न्यून्हैम और उन वृद्धा के बीच बात-चीत का क्रम इस प्रकार आरम्भ हुआ।

"आपकी कब शादी हुई थी?" वृद्धा ने पूछा।

"३ वर्ष पहले," श्रीमती न्यून्हैम ने उत्तर दिया।

"बच्चे कितने हैं?"

"एक भी नहीं।"

वृद्धा के चेहरे पर निराशा छा गई। एक स्त्री को दूसरी स्त्री की मनोभावनाएँ समझने में अधिक देर न लगी। श्रीमती न्यून्हैम ने कहा—"कृपया इन्हें बताइए कि मैं मैलबौर्न के एक स्कूल में ७०० बच्चों की देख-भाल करती हूँ। वे सब मेरे बच्चे हैं।" परन्तु इससे उन वृद्धा को सन्तोष न हुआ।

मैं यह जानने को इच्छुक था कि इस अवस्था में भी वह वृद्धा इतने उत्साह से समिति के कार्यों में क्यों भाग लेती हैं जब कि इस अवस्था में प्रायः जानने और सीखने की सभी इच्छाओं का अन्त हो जाता है। मैंने उन वृद्धा से यही प्रश्न किया। उन्होंने बताया कि उनके दिनों में जवान स्त्रियों को ये सुविधाएँ प्राप्त नहीं थीं। आज से ५० वर्ष पूर्व जब वह जवान थीं तो गाँव में स्त्री शिक्षा की बात तो कोई सोच भी नहीं सकता था। परन्तु उनका हृदय पढ़ने-लिखने और संगीत की शिक्षा के लिए सदा लालायित रहता था। तब से वह वृद्धा अपने हृदय में यह अभिलाष संजोए थीं। स्त्रियों को अपने पैरों पर आप खड़े होने का प्रयास करते देख कर उन्हें अपार सुख मिलता था।

अब मेरे पास पूछने को कुछ न था। न्यून्हैम दम्पति के साथ मैं कलकत्ता लौट आया, एक अमूल्य स्मृति हृदय में संजोए।

मेरा लड़का किसान बालकों के दल के साथ विलायत घूम आया है, अब वह हल कैसे चला सकता है!

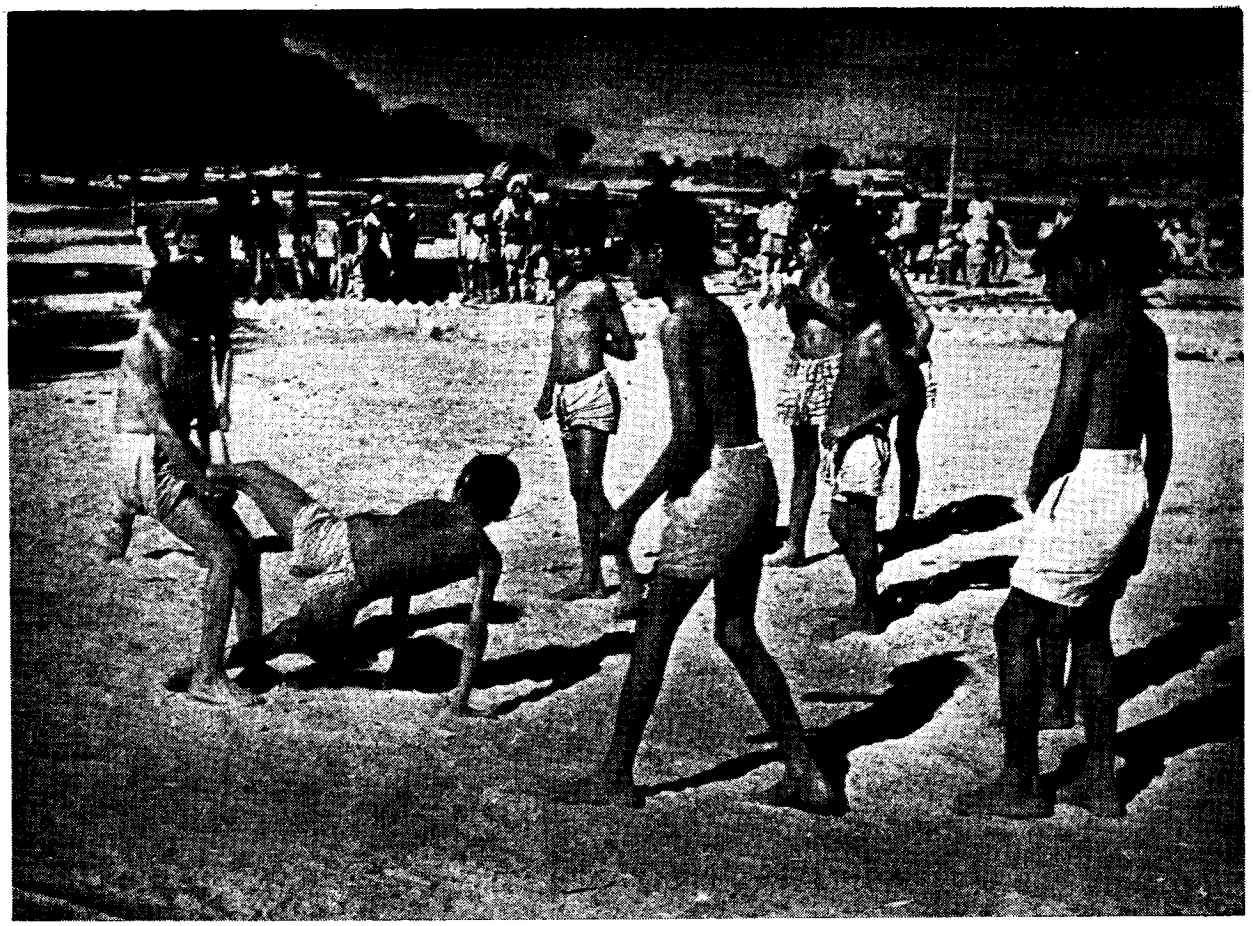

पंजाब के देहात की एक झाँकी

पंजाब का ग्राम्य जीवन

एम० एस० रन्धावा

भारत में देहाती जीवन का सब से बड़ा अभिशाप यह है कि गाँव के युवक पढ़-लिख कर शहरों में चले जाते हैं। अक्सर यह होता है कि मैट्रिक पास करते ही किसान का लड़का अपना पैतृक पेशा छोड़ किसी छोटी-मोटी नौकरी की तलाश में शहर चला जाता है। इसका सबसे बड़ा कारण है गाँवों का कटु और नीरस जीवन। शहरों में रहनेवाले लोग इस बात का बहुत कम अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि गाँव में रहनेवाले लोगों का जीवन कितना शुष्क है। भारतीय किसान की तुलना तो उस बैल से की जा सकती है जो जीवन का भार ढोते-ढोते अन्त में मृत्यु में ही अपने लिए शान्ति ढूँढ़ता है। बीज बोने से लेकर फ़सल के काटने और दाने निकालने तक अगर एक किसान के जीवन का अध्ययन किया जाए तो सिवाए कठोर परिश्रम के उसके जीवन में कोई रस दिखाई नहीं देता। उसे मई की घोर तपती दोपहरियों में घंटों अपने बैलों के साथ काम करना पड़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि उसकी कुशाग्रता और प्रतिभा समाप्त हो जाती है। यही कारण है कि किसान का बेटा मैट्रिक पास करते ही गाँव के कठोर जीवन से भागना शुरू कर देता है। कई बार तो अच्छे खाते-पीते परिवारों के लड़के भी छोटी-मोटी नौकरियों के पीछे भागते नज़र आते हैं। अतः अगर देखा जाए तो देहाती इलाकों में शिक्षा का ऐसा दुष्प्रभाव पड़ रहा है कि खेती-बाड़ी का धन्धा समझदार लोगों के हाथों में न रह कर अपेक्षाकृत मूर्ख और अनपढ़ लोगों के हाथों में जा रहा है।

भारतीय किसान के लिए छोटे ट्रैक्टरों का इस्तेमाल और देहात में बिजली का प्रयोग स्थिति में पर्याप्त सुधार कर सकता है। हर्ष की बात है कि अब भारत में ट्रैक्टर बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। ट्रैक्टर के इस्तेमाल में साधारणतया अधिक मस्तिष्क की ज़रूरत

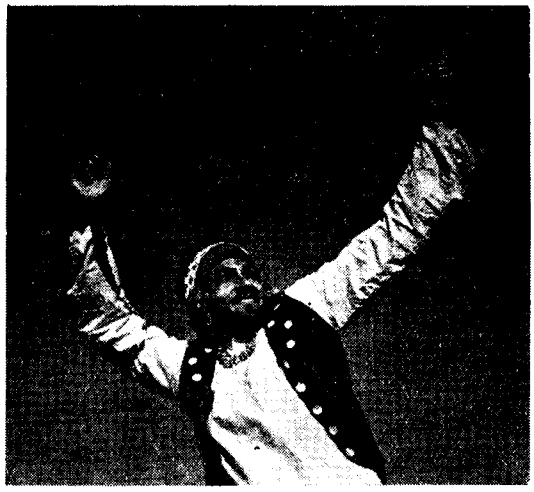

एक भंगड़ा नर्तक

पड़ती है। और अब ऐसी आशा की जा सकती है कि ट्रैक्टर बहुत हद तक पंजाब में देसी हलों का स्थान ले लेंगे। अब बड़े-बड़े किसान तो अपने ही ट्रैक्टर खरीद रहे हैं, लेकिन खुशी की बात यह है कि छोटे-छोटे किसान भी अब मिलकर ट्रैक्टर खरीद रहे हैं। अगर हम इस बात की ओर ध्यान दें कि कितनी भूमि बेकार पड़ी है तो हमें तुरन्त इस बात का पता चल जाएगा कि हमारे पास बैलों की कितनी कमी है। इसलिए इतनी अधिक ज़मीन का पुनरुद्धार करने के लिए ट्रैक्टरों और बैलों को अभी कितना ही काम मिल कर करना पड़ेगा। ट्रैक्टरों के इस्तेमाल से किसान का जीवन अधिक आनन्दमय हो जाएगा।

पंजाब के गाँवों में बिजली का ज्यादा से ज्यादा प्रचार हो रहा है। नंगल और भाखड़ा बाँध से प्राप्त होनेवाली बिजली से पंजाब में बिजली की कोई कमी नहीं रहेगी। इसके साथ ही इस बाँध की नहरों से हिसार, रोहतक, फिरोज़पुर और पेप्सू के असिंचित इलाकों की सिंचाई भी संभव हो सकेगी। खेतों में सस्ती बिजली और छोटी-छोटी मोटरों से बहुत से काम किए जा सकते हैं। पंजाब में खेती-बाड़ी के लिए नलकूप भी अब बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। अब बिजली से चलनेवाले नलकूपों के प्रयोग से बैलों पर होनेवाले अधिक खर्च में भी कमी हो जाएगी और पानी भी पहले की अपेक्षा बहुत ज्यादा मिल सकेगा।

सस्ती बिजली से घरेलू उद्योगों की भी उन्नति होगी और इससे गाँवों में रहनेवाले कारीगरों की आय में भी वृद्धि होगी। गाँवों में अनेक नए उद्योग स्थापित हो सकेंगे। वहाँ आरा मिलें, आटा पीसने की मिलें और गन्ना पेलने की मशीनें लगाई जा सकेंगी। सब्जियों और फलों के लिए वायु अनुकूलन गृहों का प्रबन्ध भी हो सकेगा और इस प्रकार गाँवों की आय में वृद्धि होगी। विज्ञान के नए साधनों और विशेषतया बिजली के अधिक प्रयोग से किसानों का जीवन सुखमय हो सकेगा और वे प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकेंगे। नलकूप, ट्रैक्टर और नए औज़ारों के इस्तेमाल के पश्चात् किसानों के पढ़े-लिखे लड़के अपने ही काम में ज्यादा दिलचस्पी लेने लगेंगे।

पंजाब एक ऐसा राज्य है, जिसमें भारी उद्योगों के पनपने की संभावनाएँ कम हैं। बिजली के आने के पश्चात् यहाँ छोटे-छोटे उद्योग ही ज्यादा पनपेंगे। इसलिए अब पंजाब की शिक्षा प्रणाली में भी ऐसे परिवर्तन होने चाहिएँ जो जनता की आनेवाली ज़रूरतों को भी पूरा कर सकें।

नए प्रकार की शिक्षा की ज़रूरत इस बात से ही सिद्ध हो जाती है कि पंजाब के कृषि कालेज को कहाँ पर स्थापित किया जाए, इस दिशा में बहुत वाद-विवाद रहा है। अब जब कृषि की शिक्षा की इतनी अधिक आवश्यकता है, यह उचित ही है कि कुछ आर्ट्स कालेजों को बन्द करके उनके स्थान पर कृषि कालेज खोले जाएँ। पंजाब में कम से कम पाँच कृषि कालेज होने चाहिएँ। अब कृषि व्यवसाय घाटे का सौदा नहीं रहा है। खेती-बाड़ी को अधिक प्रगतिशील बनाने के लिए जाटों, ज़मींदारों, उनके पढ़े-लिखे लड़कों और समझदार किसानों में अधिक रुचि पाई जाती है। अतः खेती-बाड़ी को एक उद्योग के रूप में चलाने के लिए या पूर्णतया एक आधुनिक किसान बनने के लिए जितनी ट्रेनिंग और शिक्षा-दीक्षा की ज़रूरत है, वह किसी भी धन्धे से सम्बिन्धित शिक्षा-दीक्षा से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

अब तक हमारे देश में शिक्षा का उद्देश्य ऐसे बाबू पैदा करना रहा है जो शारीरिक मेहनत से कतराते हैं। लेकिन अब ऐसी शिक्षा की ज़रूरत है जो हमें अधिक कर्मशील बनाने में सहायक हो। तभी हमारे अन्दर मेहनत करने की भावना और अनुशासन जैसे गुण आएँगे। अतः मैट्रिक पास करने के पश्चात् खाते-पीते किसानों के बच्चों के लिए एक साल का एक ऐसा

भंगड़ा नृत्य का एक दृश्य

प्रशिक्षण कोर्स हो जिसमें उन्हें ट्रैक्टर, पम्पिंग सैट और छोटी मोटरें चलाने का प्रशिक्षण दिया जावे। जहाँ तक देहाती कारीगरों का सम्बन्ध है, उन्हें भी उद्योग धन्धों के छोटे-छोटे कोर्सों में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि जब देहात में बिजली का प्रसार हो तो ये लोग इस सस्ती शक्ति का भली भाँति उपयोग कर सकें। इससे न केवल ये लोग खुद लाभ उठाएँगे अपितु देश को भी समृद्ध बनाएँगे। ऐसी ट्रेनिंग के बाद इन लोगों को छोटी मशीनों के रूप में कर्ज़े भी दिए जाने चाहिएँ। इससे न तो नगरों पर ही बोझ पड़ेगा और न ही ये कारीगर लोग खेती-बाड़ी का बोझ बढ़ाएँगे।

गाँवों से पढ़े-लिखे और समझदार लोगों के निष्क्रमण को रोकने के लिए पुस्तकालय और वाचनालय भी बहुत काम की चीज़ें हैं क्योंकि इनसे गाँव के जीवन में आकर्षण बढ़ता है। कई बार जब पढ़े-लिखे देहाती सेना आदि में बाहर रह कर और विदेश घूम कर वापस आते हैं, तो उन्हें गाँव में पढ़ने-लिखने की सुविधाओं का अभाव बहुत अखरता है। इसका परिणाम यह होता है कि उन सैनिकों का अनुभव और ज्ञान सब व्यर्थ ही जाते हैं। इसके अतिरिक्त गाँवों में शिक्षा की कमी के कारण बहुत से समझदार लोग वैसे भी वहाँ बसने से घबराते हैं और अपने बाप दादा के गाँव को छोड़ देते हैं। ऐसी स्थिति को सुधारने के लिए पुस्तकालय और वाचनालय जिनमें आधुनिक ढंग की पुस्तकें और नक्शे वगैरह मौजूद हों, बहुत ही काम की वस्तुएँ हैं। इन पुस्तकालयों में आ कर अच्छे और समझदार ग्रामीण अपना खाली समय अच्छी तरह व्यतीत कर सकते हैं। एक अच्छे ढंग से सजे हुए वाचनालय को देख कर किसानों की मनोभावनाओं पर बड़ा अनुकूल प्रभाव पड़ सकता है। इससे न केवल उनकी सौन्दर्य-प्रियता में वृद्धि होगी बल्कि उनमें अनुशासन भी आएगा।

पुस्तकालयों और वाचनालयों की भाँति ही खेल भी देहाती जीवन के बोझल वातावरण को आनन्दमय बनाने में बहुत सहायक हो सकते हैं। पहले ज़माने में गाँवों में त्योहारों या मेलों पर कुश्तियाँ और दंगल कराए जाते थे। स्कूल के बच्चे भी फुटबाल, कबड्डी या बालीबाल खेला करते थे। दुःख की बात है कि यह सब अब धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त खेलों को प्रोत्साहित करके हम गाँवों में अपराधों की संख्या भी कम कर सकते हैं। अतः अब सरकार और पंचायतों दोनों को ही खेलों को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसका सीधा लाभ यह होगा कि नौजवानों की प्रकृति कुकर्मों की ओर न लगकर स्वस्थ दिशा में लगेगी और राष्ट्र उनकी इस कर्मण्यता से लाभ उठाएगा।

कुछ काल पहले देहाती जीवन इतना रूखा और आकर्षणहीन नहीं था। वहाँ नौजवान लड़कियाँ चर्खों की लय के साथ अपने सुरीले गीतों की एक मनोहारी धुन छेड़ देती थीं। पंजाब के देहात में चर्खे के बेशुमार लोकगीत मौजूद हैं। लेकिन दुःख की बात है कि अब ये गीत चर्खे के साथ-साथ ही गाँवों से विलुप्त होते जा रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में गाँवों में जो धार्मिक सुधारवादी आन्दोलन चले, उनसे युवा लोगों के कण्ठों से फूट पड़ने वाला सहज गान अब कहीं भी सुनने को नहीं मिलता। भला यह घूम-घूम कर हार्मोनियम बजानेवाले उपदेशक पुराने देहाती चारण या गायक का स्थान कैसे ले सकते हैं? पंजाब के गाँवों से मुसलमान मिरासियों के चले जाने से भी देहाती जीवन की नीरसता में वृद्धि हुई है।

लेकिन जिन गाँवों में आधुनिक शिक्षा नहीं पहुँची, वहाँ अब भी स्त्रियों ने लोरियाँ, घोड़ियाँ और सुहाग तथा चर्खे के गीत सुरक्षित रखे हुए हैं। हालांकि ग्रामोफोन से सुने जानेवाले सस्ते और वाहियात फिल्मी गीत भी इन सादे तथा सहज लोकगीतों का गला घोंटने पर तुले हुए हैं। लेकिन अभी समय है कि इन मर्मस्पर्शी लोकगीतों की परम्परा को बनाए रखने के प्रयत्न किए जाएँ ताकि प्राचीन संस्कृति की अमूल्य निधि, ये गीत रसिक युवकों के दिलों की धड़कनों को जगाते रहें।

इसी प्रकार लोकनृत्य के क्षेत्र में भी पंजाब पिछड़ा-सा प्रतीत होता है। लेकिन ज़िला काँगड़ा के गद्दी लोग अब भी अपने नृत्य और गीतों से अपने जीवन को सरस बनाते हैं। ऊन के लम्बे सफेद चोग़े पहन कर और कमर में गज़ों लम्बा काली ऊन का रस्सा लपेट कर वे इतनी मस्ती और बेपरवाही से घंटों नाचते हैं कि कुछ मत पूछिए।

कुल्लु और आस-पास के लोगों में लोक-नृत्य का बहुत ही प्रचार है और उनके नृत्य में कला का भी समावेश है। उनका 'खंगनृत्य' तो विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पंजाब के मैदानी इलाकों में ज़िला शेखूपुरा और गुजरांवाला से आनेवाले सिख जाटों में 'भंगड़ा नृत्य' का अब भी प्रचलन है। यह बड़े जीवट का नृत्य है और इसमें पौरुष का विशेष प्रदर्शन होता है। यह नृत्य वास्तव में पंजाबी लोगों के जीवन का सच्चा प्रतिनिधित्व करता है।

कुछ वर्ष पहले पंजाब के गाँवों में स्त्रियाँ अपने खाली समय में 'बाग़' और 'फुलकारियाँ' काढ़ा करता थीं। घर के कते और बुने हुए कपड़े को गहरे लाल रंग में रंग कर उस पर पीले रंग के रेशमी पट्ट से कढ़ाई की जाती थी। जिसमें नीचे का कपड़ा नज़र आता रहता है उसे फुलकारी या 'बिखरे हुए फूल' कहा जाता है और जहाँ नीचे का कपड़ा कढ़ाई से पूरा ढक जाता, उसे बाग़ या 'उद्यान' कहा जाता है। दुख का विषय है कि अब डी० एम० सी० के धागों इत्यादि का प्रचलन बहुत बढ़ रहा है और पंजाब की स्त्रियाँ अपनी परम्परागत कला को भूलती जा रही हैं। पहले एक-एक बाग़ को बनाने में कई-कई वर्ष लग जाया करते थे। अब फिर ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने बाग़ और फुलकारियों को इकट्ठा करके उनका एक संग्रहालय बनाएँ। यहाँ इस बात पर ज़ोर देना बहुत ज़रूरी है कि पंजाब के सांस्कृतिक पुनरुत्थान में इन बाग़ और फुलकारियों को पुनर्जीवन देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

समस्या कैसे हल हुई

सावित्रीदेवी वर्मा

उस दिन शिविर से घर पहुँचते-पहुँचते रात के दस बज गए। गर्मी और थकावट के मारे बुरा हाल था। कपड़े और बाल धूल से पटे हुए थे। घर आकर पहला काम किया स्नान। जब भोजन करने बैठी तो बच्चों ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी—"हाँ, माँ गाँव कैसा था? तुम्हारी पिकनिक कैसी रही? तुमने वहाँ जाकर क्या किया? ज़रा बताओ भी।"

मैंने कहा—'हम लोग वहाँ पिकनिक के लिए तो गए नहीं थे। मेरे जाने का विशेष उद्देश्य था गाँव के घरेलू जीवन की समस्याओं को समझना। खैर, समस्याएँ तो उनकी अनेक हैं, वह तो फिर बताऊँगी, परसों मुझे फिर वहाँ जाना है, तुम लोग एक मदद करो। बताओ करोगे?"

मेरा प्रश्न सुन कर बच्चे कुछ सोच में पड़ गए। मैंने कहा—"देखो काम कुछ कठिन नहीं है। गाँव की बहनों को जब मैंने सफाई से रहने के लिए कहा तो उन्होंने मेरे आगे एक समस्या उपस्थित की कि सफ़ाई के लिए न तो हमारे पास साबुन है और न साफ़-सुथरे कपड़े। सो, अब जल्दी में तो कुछ विशेष हो नहीं सकता। तुम लोग एक काम करो। कल सुबह अपने मोहल्ले में अड़ोस-पड़ोस से पुराने कपड़े और साबुन खरीदने के लिए कुछ चन्दा इकट्ठा कर सको तो यह समस्या हल हो जाए। सुबह मैं भी सन्दूक और अलमारियों के कपड़े ठीक से जमा दूँगी, जो कपड़े छोटे या अपने काम के नहीं होंगे निकाल लूँगी।"

दूसरे दिन योजनानुसार सभी अपने काम में जुट गए। दो घंटे में मैंने सन्दूकों की सफ़ाई भी कर दी और बरसों से बेमतलब सहेज कर रखे हुए कई कोट, स्वेटर, कमीज़ें, जाकट, पुरानी साड़ियाँ 'आऊट ऑफ फैशन' ब्लाउज़ आदि बीस-पच्चीस कपड़े छाँट कर अलग रख दिए। बड़ों के पहनने के लिए तो कपड़े हो गए थे, पर बच्चों के लिए कुछ विशेष नहीं निकला। मैंने सोचा बच्चे मोहल्ले से काफी कपड़े इकट्ठे करके लाएँगे। पर जब वह आए तो उनके हाथ में केवल ३–४ छोटे-छोटी कमीज़ें और २ फ्राँकें थे।

मैंने पूछा—"बस यही मिला? क्या तुम जिन-जिन घरों में, मैंने जाने को कहा था वहाँ गए थे?"

बड़ी लड़की बोली—"माँ क्या बताएँ लोगों के टके से जवाब सुन कर बड़ा बुरा लगा। मिलवालों की लड़की के पास गए तो वह बोली मेरी तो कपड़ों की अलमारी की चाबी ही मुन्ने ने रात खो दी है। नहीं तो मैं बहुत कपड़े देती। राय साहब की पत्नी पहले तो बहुत अच्छी तरह बोलीं; पर जब

यह कल का छोकरा हमारा मास्टर बनने चला है!

उन्हें हमारे आने का कारण पता चला तो कहने लगीं—'क्या बताऊँ बिटिया, मैं तो जाने की जल्दी में हूँ, कभी फिर आना।' मुंसिफ साहब की पत्नी बोलीं—'कपड़े तो मेरे पास थे पर मैंने होली पर धोबी, मेहतर तथा कहारी के बच्चों को दे दिए।' गुप्ता मजिस्ट्रेट की स्त्री तो ऐसी गरज पड़ी मानो हम उसको लूटने ही पहुँच गए हों। बोली—'पुराने कपड़े बेकार थोड़े होते हैं। आठ कपड़े देकर पिछले हफ्ते मैंने बाल्टी ली थी। छोटे-छोटे कपड़ों के बदले में भी बर्तनवाला प्लेट-प्यालियाँ दे जाता है। भला फिर मैं तुम्हें क्यों दूँगी?' जब हम सेठ धन्ना लाल के यहाँ पहुँचे तो उनकी बूढ़ी अम्मा अपनी बहू से बोलीं—'क्यों री दुलहन क्या यह लोग कपड़े माँग कर पहनती हैं।' फिर सेठानी ने समझाया कि अपने लिए नहीं गाँववालों के लिए कपड़े इकट्ठे कर रही हैं, फिर हमसे बोली—'मुन्नी! तुम्हारी माँ की तरह हमें इतवार की छुट्टी तो होती नहीं। मैं तो अभी जमुना जी नहाकर आई हूँ। आज इतवार है, ठाकुर जी का भोग तैयार करना है। दोपहर को कथा सुनने जाना है। फुरसत कहाँ है, सन्दूकों की छानबीन करने की? तुम्हारी माँ तो पूजा, कथा-वार्ता में विश्वास नहीं करती।"

यह वाक्य कहते हुए मेरी लड़की का मुँह तमतमा आया और बोली—"मैंने सेठानी जी से कहा—'माफ करें मेरी माँ धर्म-ढकोसलों में विश्वास नहीं करती। जन जनार्दन की पूजा ही उनके विचार में सच्ची पूजा है।' भला बताओ माँ पुराने कपड़ों के लिए तो इतना कुछ सुनना पड़ा, अगर कहीं साबुन के लिए चन्दा माँगते तो अधिकांश स्त्रियाँ यही सोचती कि हम अपने लिए चन्दा इकट्ठा कर रहे हैं।"

छोटे मुन्ने को बहुत बुरा लगा। वह बोला—"माँ तुम निराश मत हो, हम तीनों बहन भाई अपने सन्दूक ठीक करते हैं। दस बारह कपड़े तो हमारे सन्दूक में से ही निकल आएँगे। अपने साथ के अन्य बच्चों को भी मैं कहता हूँ, देखती जाना अभी बीस पच्चीस कपड़े इकट्ठे हो जाएँगे।"

मैंने अपने बड़े बच्चे के पास होने की मानता की थी, उसके दस रुपए रखे थे। इस रकम से मैंने साबुन खरीदने का निश्चय किया। साबुन की दुकान पर एक परिचित कवि मिल गए। गोष्ठियों में बहुत जोश के साथ ऐसी क्रान्तिारी कविताएँ जिनमें गरीबों की दयनीय दशा का वर्णन होता था मैंने इन्हें पढ़ते सुना था। सोचा जनता के कवि हैं। जनता की दुखती नस को पहचानते हैं। ऐसे मौके पर शायद कुछ मदद करें। पर मुँह खोलते संकोच होता था। मुझे १२ सेर साबुन तुलवाते देखकर कवि महोदय को कुछ मज़ाक सूझा पूछ ही तो बैठे—"बहन जी साबुन की इतनी बर्फी आप क्या करेंगी?"

मैंने कहा—"भाई, गाँव के बच्चों के लिए खरीद रही हूँ। फतेहपुर बेरी में शिविर लगा है। आप भी इस सेवा कार्य में कुछ हाथ बटा सकें तो अच्छा है।"

कवि महोदय मुँह बनाकर अपनी लम्बी जुल्फों पर हाथ फेरते हुए बोले—"अजी, आप बैठे-बिठाए क्या मुसीबत मोल ले बैठीं। क्या गाँव की जाहिल जनता की दशा इस तरह सुधर सकती है? सारे देश में जब क्रान्ति होगी तभी समाज की हालत सुधरेगी। मैं तो आपको यही सहयोग दे सकता हूँ कि एक कविता रच दूँ जिसको वहाँ जोश के साथ पढ़कर कोई सुना दे। फिर देखिए कविता का एक-एक शब्द मुर्दा दिलों में प्राण न फूँक दे तो कहिएगा।"

साबुन लेकर नमस्ते करके मैं वहाँ से चल दी। सोचा यह हैं बरसाती मेंढकों की तरह टरटर करने वाले जनता के कवि।

शाम तक बच्चों ने चालीस-पचास कपड़े और बहुत-सी पुस्तकें इकट्ठी कर दीं। इन नन्हें बाल गोपालों का उत्साह प्रशंसनीय था। ये लोग अपनी माताओं से मचल-मचल कर कपड़े ले आए थे।

बहनों के असहयोग से मुझे इतना दुख नहीं हुआ जितना कि दान विषयक उनकी अज्ञानता पर। हमारे देश में आम घरों में पात्र-कुपात्र का ख्याल किए बिना अपनी श्रद्धानुसार बहुत कुछ दान दिया जाता है। पर ऐसा दान सार्थक नहीं होता। विशेष करके धर्म पुण्य के मामले में स्त्रियाँ बहुत ही रूढ़िवादी दृष्टिकोण रखती हैं। वे तीज-त्यौहारों पर श्राद्ध और पूजा पर खाते-पीते, पले हुए ब्राह्मणों को थाल भर कर सीधा देंगी. कुत्तों, कव्वों, और गायों को पकवान खिलाएँगी, पर गरीब बच्चों और भूखों को खिलाना-पिलाना उचित नहीं समझतीं। स्वर्ग में अपनी सीट बुक कराने के लिए वह मन्दिरों में चढ़ावा चढ़ाएँगी पर विद्यादान या समाज सेवा के लिए श्रम या धन दान की बात सुनकर नाक-भौं सिकोड़ेंगी। ब्रह्म भोज और हट्टे-कट्टे भिखारियों को भीख देकर वे न केवल अन्न का अपव्यय ही करती हैं, अपितु समाज में आलसी और निकम्मे लोगों की संख्या बढ़ाती हैं।

यह बात नहीं है कि गाँववालों के लिए १५-२० सेर साबुन या कुछ कपड़े मिल जाने से समस्या हल हो जाएगी, पर जरूरत तो इस बात की थी कि बहनों के दान-पुण्य विषयक दृष्टिकोण में किसी प्रकार परिवर्तन किया जाए। शाम को हिन्दी पार्क (दरियागंज) में महिलाओं का एक सत्संग नियम से लगता है। इस मामले में मैंने सत्संग की बहनों का सहयोग लेने का निश्चय किया। जब दो-चार भजन हो चुके तो अपना परिचय देकर मैंने उन्हें यह बताया कि आजकल फतेहपुर बेरी में शिविर कार्य चल रहा है। इस काम में तभी सफलता मिल सकती है जब कि हम सब थोड़ा बहुत सहयोग दें। गोवर्द्धन अकेले से तो उठ नहीं सकता। यदि आप सब अपनी अन्य बहनों को अपने उदाहरण

और सहयोग से प्रेरणा दे सकें तो जन जनार्दन की अच्छी सेवा हो सकती है।

मेरी बात सुन कर हर एक ने अपनी-अपनी अड़चन पेश की—हमें भला अवकाश कहाँ है? हम कमाती तो हैं नहीं। हमें समाज सेवा करने के लिए घर वाले जाने नहीं देंगे, बुढ़ापे के कारण चलना-फिरना वैसे ही मुश्किल है, दूसरों की सेवा भला कैसे करेंगे?

सब सुन कर मैंने कहा—"आप सब भगवान् में आस्था रखती हैं। यदि इच्छा हो तो सब कुछ कर सकती हैं। आप में से अधिकांश बहनें महीने में एक-दो सीधे निकालती हैं, भगवान् के नाम से प्रसाद चढ़ाने की मानता करती हैं, उसी रकम को आप समाज सेवा में आसानी से खर्च सकती हैं। अब दकियानूसी ख्यालों को छोड़ें। जमाना करवट बदल रहा है, उसी के अनुसार आपको अपने तौर-तरीके भी बदलने होंगे। ज़रूरतमन्दों के लिए कुछ करें, यही भगवान् और समाज की सबसे बड़ी सेवा है।"

अधिकांश बहनों ने उस दिन यह प्रण किया कि दान-पुण्य के नाम पर वे घर में हर मास सीधा न रखकर कुछ रकम अलग धरेंगी। मौके पर यह कोष ज़रूरतमंदों के लिए खर्चा जाएगा। उस दिन का सत्संग सच्चे अर्थ में सफल हुआ। कुछ बहनों ने गाँव में बटवाने के लिए कपड़े भी मेरे घर भेजे। इस कोष का लाभ उस दिन पता चला जब कि बाढ़ पीड़ितों के लिए चीनी, चाय, दवाई आदि के लिए पैसे की जरूरत पड़ी। बहनों ने इस के लिए अच्छी रकम इकट्ठी करके दी। पुराने कपड़े भी जमा किए। इस प्रकार एक समस्या ने अनेक समस्याओं का हल कर दिया।

कहने की ज़रूरत नहीं कि शिविर की माता जी ने साबुन, पुस्तकें और कपड़ों को गाँव के गरीब भाई बहनों में बड़े चाव के साथ बाँटा। जो महिलाएँ सफ़ाई के सुझावों पर नाक-मुँह सिकोड़ती थीं, साबुन और कपड़े पाकर वे बहुत खुश हुईं। उत्सव के दिन जब मैं फिर गई तो गाँव के अधिकांश बच्चे साफ़-सुथरे, नहाए-धोए दिखाई पड़े। महिलाएँ भी अपने सिर गूंथ कर नए लहँगे और रंग बिरंगे दुपट्टे पहन कर जलसे की शोभा बढ़ा रही थीं। पुस्तकें और पत्रिकाएँ स्कूल की अलमारी में सजा दी गई थीं ताकि जिसको पढ़ना हो वहीं आकर अपनी सुविधा से पढ़ सके।

★

कर्म सेवक—[पृष्ठ ९ का शेषांश]

हमारी दशा सुधारने के लिए दिन-रात परिश्रम करते हैं। उनके प्रोत्साहन पर हम लोगों ने अपने गाँवों का रंगरूप ही बदल दिया है। क्या तुम सबको उनका फैसला मान्य होगा?"

एकत्रित जनसमूह ने 'हां' कहने के साथ-साथ अपनी-अपनी मांग पर ज़ोर देना भी शुरू कर दिया और उत्तेजना घटने की बजाए बढ़ती ही गई।

मेरी समझ में न आया कि मैं क्या करूँ। मैं भगवान् से प्रार्थना करने लगा कि यह मुसीबत कम से कम कुछ देर के लिए तो टल ही जाए ताकि मुझे सोचने का समय मिले। भगवान् ने मेरी सुन ली और वर्षा शुरू हो गई। भीड़ तितर-बितर होने लगी और वर्षा से सिर छिपाने के लिए सभी लोग कोलाथूर की तरफ़ बढ़े। मुझे एक ऐसे मकान में ठहराया गया जो अन्दर बाहर से बिलकुल साफ़-सुथरा था। मुझे यह भी बताया गया कि गाँव के सभी मकान इसी प्रकार साफ़-सुथरे हैं। यह सब देख कर मुझे बेहद खुशी हुई, लेकिन मुश्किल हल होने का कोई रास्ता मुझे नज़र नहीं आ रहा था। वर्षा समाप्त होते ही मैं बाहर निकला। वर्षा के पानी से गलियाँ धुल गई थीं और नालियाँ पानी से लबालब भरी हुई थीं। मैंने यों ही पूछा—"यह पानी किधर जाता है?" पता चला कि पानी रास्ते में ही सूख जाता है। अमूल्य पानी के यों नष्ट हो जाने के विषय में मैं सोच ही रहा था कि मेरी निगाह उस भूमि पर गई जिसको लेकर झगड़ा उठ खड़ा हुआ था। उसके पीछे एक तालाब भी था। मुझे अचानक ही इस समस्या का एक हल नज़र आ गया। क्यों न वर्षा के इस पानी को, उस भूमि पर एक नाली खोद कर तलाब में ले जाया जाए। दोनों गाँवों को सिंचाई के लिए पानी मिल जाएगा जिससे दोनों ही को लाभ होगा। मैंने गाँववालों को फिर से इकट्ठा करवाया। गाँव और तालाब के बीच की ढलवाँ भूमि की तरफ़ इशारा करते हुए मैंने कहा—"क्यों न वर्षा के पानी से पूरा-पूरा फ़ायदा उठाया जाए? झगड़े वाली भूमि पर एक नाली खोद दी जाए। नाली के एक तरफ़ एक गाँववाले और दूसरी तरफ़ दूसरे गाँववाले वृक्ष लगा लें।" गाँववाले खामोश रहे। उन्होंने मेरे सुझाव के सम्बन्ध में सोचा और फिर एक-दूसरे की तरफ़ देखने लगे। मुझे यह ताड़ते देर न लगी कि उपयुक्त मनोवैज्ञानिक घड़ी आ चुकी है। मैंने फावड़े लाने को कहा और एक फावड़ा लेकर उस भूमि को खोदना आरम्भ कर दिया। इसके पश्चात् जो कुछ हुआ उससे मैं चकित् रह गया। पलक मारते ही सैंकड़ों फावड़े उस भूमि को खोदने में लग गए।

इस तरह झगड़े का फैसला हो गया। श्रीनिवासन ने फिर मेरे चरण छुए। मैंने उसे रोकते हुए कहा—"चरण तो मुझे तुम्हारे छूने चाहिएँ। तुमने इन गाँववालों में सुधार की भावना जागृत की। मैंने तो सिर्फ़ इसका लाभ ही उठाया है। तुम्हारा नेतृत्व इसी में है कि तुम सदा अन्य लोगों के सम्बन्ध में ही सोचते रहो और तुम से जो कुछ भी बन सके करो।"

मैं वहाँ से लौटा, दिल में यह आशा लिए कि हर गाँव में एक श्रीनिवासन पैदा होगा जो गाँववालों के सामने एक आदर्श रखेगा और अपनी सलाह और सहयोग से उन्हें अपने उद्देश्यों की प्राप्ति और क्षमता का एहसास करवाने में सहायक होगा।

प्रगति के पथ पर

पहले की तरह इस बार भी प्रधान मन्त्री का जन्म-दिन सामुदायिक विकास क्षेत्रों के निवासियों ने सैंकड़ों नए स्कूल बनाने और बच्चों के लिए अन्य सुविधाएँ पैदा करने की प्रतिज्ञा करके मनाया। सामुदायिक योजना प्रशासक को इस सम्बन्ध में सैंकड़ों तार और पत्र मिले हैं जिनमें कुल मिला कर ७६४ नए स्कूल, बालकों के लिए कुछ पुस्तकालय और इन संस्थाओं के लिए इमारतें बनाने के लिए भूमि देने का उल्लेख किया गया है। सामुदायिक योजना प्रशासक ने, नेहरू जी के जन्म-दिन पर विकास क्षेत्रों में बसे हुए लाखों नर-नारियों की ओर से उन्हें यह उपहार भेंट किया।

जन्म-दिन पर प्रधान मन्त्री को नए स्कूल भेंट करने की तो परम्परा-सी बन गई है। पिछले वर्ष भी इस दिन लगभग ४० लाख रुपए की लागत के नए स्कूल और बच्चों के लिए अन्य संस्थाएँ लोगों ने उन्हें भेंट में दी थीं। उससे पहले दो वर्षों में भी कई नए स्कूल खोलने की प्रतिज्ञा की गई थी। नए स्कूल खोलने की भी लगभग सभी प्रतिज्ञाएँ गाँवों में पूरी हो चुकी हैं और नए स्कूल सामुदायिक विकास कार्य का एक अंग बन चुके हैं। इस वर्ष का पूरा विवरण इस प्रकार है—

नए (प्रस्तावित) स्कूल	... ...	७६४
भेंट की गई भूमि	... ...	१,७२६ एकड़
पुस्तकालयों और खेल सामग्री का मूल्य		४७,८३० रुपए
अन्य विभिन्न भेंटों का मूल्य	...	३,६३,४०३ रुपए
बच्चों के लिए नए (प्रस्तावित) बाग़		६४
पुस्तकालय	... ...	३२
सामाजिक केन्द्र	... ...	१
बच्चों के लिए हॉल	... ...	१

इन सब भेंटों की कुल लागत लगभग ५० लाख रुपए होगी।

ये प्रस्ताव भारत के लगभग हर राज्य से आए हैं। राजस्थान में १६७, भोपाल में १२०, अजमेर में ६०, पेप्सू में ६३, सौराष्ट्र में ५५, विन्ध्य प्रदेश में ४०, मध्य भारत में ३५, आसाम में ३३ और दिल्ली में ३१ नए स्कूल बनाने का प्रण किया गया है। आन्ध्र, बिहार, बम्बई, कुर्ग, हिमाचल प्रदेश, हैदराबाद, कच्छ, मध्यप्रदेश, मद्रास, मणिपुर, मैसूर, उड़ीसा, पंजाब, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में भी लोगों ने नए स्कूल और बाल कल्याण संस्थाएँ स्थापित करने का फैसला किया।

सामुदायिक योजना प्रशासक ने प्रधान मन्त्री को जन्म दिन पर सामुदायिक विकास प्रशासन की नवीनतम पुस्तक "कुरुक्षेत्र—भारतीय सामुदायिक विकास कार्यक्रम १९५२-५५ एक अध्ययन" भी भेंट की। इस पुस्तक की प्रस्तावना में राजा जी ने लिखा है—"काफी कुछ सोचना और करना बाक़ी है। लेकिन परिश्रम और चिन्ताओं के इस काल में ही मानवी आनन्द की प्राप्ति हो सकती है—कार्य सम्पन्न हो जाने पर नहीं। १४ नवम्बर, १९५५ के दिन सारे कार्यकर्त्ता अपने प्रिय नेता के साथ इस खुशी को बाँटना चाहते हैं।"

× × × ×

दूसरी पंचवर्षीय योजना काल में उत्तर प्रदेश सरकार ने ७२७ नए राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्डों (जिनमें से २४६ का बहुमुखी विकास होगा) की स्थापना करने का फैसला किया है। ये खण्ड वर्तमान १४३ राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्डों के अतिरिक्त होंगे।

दूसरी पंचवर्षीय योजना के पहले वर्ष में ९५ खण्डों पर कार्य आरम्भ किया जाएगा। इनमें से २४ का बहुमुखी विकास किया जाएगा। विकास की दृष्टि से राज्य को चार क्षेत्रों में बाँटा गया है—पहाड़ी क्षेत्र, बुन्देलखण्ड क्षेत्र, केन्द्रीय और पश्चिमी मैदानी क्षेत्र और पूर्वी मैदानी क्षेत्र। पहाड़ी क्षेत्र में गढ़वाल, टेहरी-गढ़वाल, नैनीताल, अल्मोड़ा और देहरादून के ज़िले शामिल हैं। इस पहाड़ी क्षेत्र में १७ वर्तमान खण्डों के अतिरिक्त मार्च १९६१ तक ५१ नए विस्तार सेवा केन्द्रों पर कार्य आरम्भ हो जाएगा। इन ५१ केन्द्रों में से १७ का बहुमुखी विकास किया जाएगा। दूसरी पंचवर्षीय योजना के पहले वर्ष १९५६-५७ में पहाड़ी क्षेत्र में ६ नए विस्तार सेवा केन्द्रों का उद्घाटन किया जाएगा। इन ६ केन्द्रों में से एक का बहुमुखी विकास किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश सरकार ने भारत-तिब्बत सीमा पर बसनेवाली भोटिया जाति के लोगों के लिए कई नए प्रशिक्षण केन्द्र खोले हैं। शिक्षार्थियों को ऊन बनाने की शिक्षा दी जाएगी। ऊन इस क्षेत्र का प्रमुख उद्योग है।

समाचार समीक्षा

मोडासा के किसानों को दिल्ली यात्रा

२५ सितम्बर, १९५५ को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति ने ४५० किसानों के एक दल से एक अनौपचारिक स्वागत भोज में भेंट की। गुजरात के मोडासा सामुदायिक विकास खण्ड के किसानों का यह दल देश के विभिन्न विकास खण्डों की यात्रा पर निकला हुआ है। दल की एक वृद्धा स्त्री ने राष्ट्रपति को फूल-माला पहनाई।

किसानों के सम्मुख भाषण देते हुए राष्ट्रपति ने उनसे मिलने पर प्रसन्नता प्रकट की, विशेष रूप से इसलिए कि वे किसान देश के एक ऐसे भाग से आए थे जहाँ राष्ट्रपति स्वयं नहीं जा सके हैं। राष्ट्रपति ने इस विचार को पसन्द किया कि लोग देश के दूरस्थ प्रदेशों का भ्रमण करें। राष्ट्रपति ने बताया कि ऐसी यात्राओं का शैक्षणिक महत्व है और ये यात्राएँ किसी तीर्थ यात्रा से कम नहीं हैं। राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने सामुदायिक विकास खण्डों की सफलता पर सन्तोष प्रकट किया।

उत्तर प्रदेश की प्रगति

उत्तर प्रदेश के वर्तमान २८ राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्डों को सामुदायिक विकास खण्डों के ढाँचे पर बहुमुखी विकास खण्डों में परिवर्तित किया जा रहा है। इस परिवर्तन से विकास का व्यय दुगुना हो जाएगा। खण्डों के चुनाव में इस तथ्य का सबसे अधिक ध्यान रखा गया है कि अमुक खण्ड की जनता के विकास कार्यक्रमों को मूर्त रूप देने में कितना योगदान दिया।

करीब एक वर्ष पहले एक दुर्घटना में १० श्रमदानी छात्रों को अपने जीवन से हाथ धोने पड़े थे। सहारनपुर ज़िले में देवबन्द के निकट रणखण्डी रेलवे-क्रासिंग पर इन छात्रों की बस एक रेलगाड़ी से टकरा गई थी जिसके कारण लारी में बैठे १० छात्रों की मृत्यु हो गई थी। लगभग २०० छात्रों का एक दल जमना नदी पर एक बाँध के निर्माण में जुटा हुआ था और ये १० छात्र अपने साथियों के लिए भोजन लेने जा रहे थे। स्थानीय जनता ने चन्दा संग्रह करके इन १० छात्रों की स्मृति में एक सामुदायिक केन्द्र, एक औद्योगिक स्कूल और एक हस्पताल का निर्माण किया है। राष्ट्रपति की यह यात्रा इन संस्थाओं के प्रतिष्ठान के सम्बन्ध में ही थी।

देहाती स्त्रियों की समस्याओं को समझने और सुलझाने के लिए लड़कियों के देहाती क्लब स्थापित करने का एक प्रस्ताव उत्तर प्रदेश सरकार के विचाराधीन है। आरम्भ में दो पथ-प्रदर्शक योजनाएँ चालू की जाएँगी जिनमें से एक लखनऊ ज़िले में होगी। राज्य में स्त्रियों के कल्याण-कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए ग्राम सेविकाओं के दो प्रशिक्षण केन्द्र खोलने का प्रस्ताव भी उत्तर प्रदेश सरकार के विचाराधीन है। प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम की अवधि ९ मास होगी।

इस वर्ष के प्रारम्भ में उत्तर प्रदेश के सामुदायिक विकास खण्डों में जो कुटीर उद्योगों के उत्पादन सम्बन्धी परियोजना चालू की गई, उसके परिणाम बहुत उत्साहवर्धक हैं। ७२ केन्द्रों में प्रशिक्षण-उत्पादन कार्यक्रम चालू है जिसके अन्तर्गत राज्य के ६,१०० गाँव आते हैं और इन केन्द्रों में प्रशिक्षणार्थियों की कुल संख्या १,०६२ है।

अम्बर चर्खा

सर्व सेवा संघ ने अम्बर चर्खे को पुरः स्थापित करने का सुझाव रखा है। अम्बर चर्खे का आविष्कार सन् १९४९ में तमिलनाड में कोविलपट्टी के एकम्बर नाथ ने किया था। चर्खे के मुख्य पुर्जे धातु के बने थे और कुछ पुर्जे रबड़ के थे। इसकी लागत का अनुमान ५०० रुपए था और इसका निर्माण करना भी सरल न था। अनेक प्रयोगों के उपरान्त लकड़ी का अम्बर चर्खा बनाना भी संभव हो सका। इस चर्खे को कोई भी बढ़ई बना सकता है और इस पर लागत भी करीब ९० रुपए आएगी।

इस चर्खे पर कताई करने के लिए किसी विशेष दक्षता की आवश्यकता नहीं। इसका तार समान रहता है और मिल के सूत की तरह मज़बूत रहता है। अम्बर चर्खे में चार तकवे होते हैं। और इसकी उत्पादन-क्षमता भी अधिक होती है।

सर्व सेवा संघ के एक प्रवक्ता का कहना है कि अम्बर चर्खे के प्रयोग में आने से द्वितीय पंचवर्षीय योजना में ५० लाख व्यक्तियों को काम मिलेगा। संघ का प्रस्ताव है कि २० करोड़ रुपए की लागत से २५ लाख चर्खों का प्रयोग आरम्भ किया जाए। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में आयोजना कमीशन ने हथकर्घे के कपड़ा उत्पादन का लक्ष्य ३०० करोड़ गज़ रखा है। अब तक हथकर्घों में मिल के कते सूत का प्रयोग होता है, परन्तु अम्बर चर्खे के प्रयोग से हाथ के बुने कपड़े के लिए सूत की सारी आवश्यकता पूरी हो जाएगी।

फरीदाबाद सामुदायिक योजना खण्ड के अन्तर्गत फतेहपुर बलौच
गाँव में हरिजनों द्वारा बनाया गया एक कुआँ

भारत की एकता का निर्माण

(सरदार वल्लभ भाई पटेल)

भारत की एकता के निर्माता सरदार पटेल के २७ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाषणों का यह संग्रह हाल ही में प्रकाशित हुआ है।

१५ अगस्त १९४७ को जब भारत स्वाधीन हुआ, तब भारत में ९ प्रान्तों के अतिरिक्त ५८४ रियासतें थीं। इन ५८४ रियासतों में केवल हैदराबाद, काश्मीर और मैसूर यही ३ रियासतें ऐसी थीं, जो आकार और आबादी के लिहाज से पृथक् राज्यों का रूप धारण कर सकती थीं। अधिकांश रियासतें बहुत छोटी थीं और २०२ रियासत तो ऐसी थीं, जिनका क्षेत्रफल १० वर्गमील से अधिक नहीं था। उस पर भी ये सब की सब रियासतें शासन की पृथक् इकाइयाँ बनी हुई थीं।

भारत के प्रथम उपप्रधान मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने दो वर्षों के भीतर ही सम्पूर्ण भारत को एक बना दिया। उक्त ५८४ रियासतों का ५,८८,००० वर्ग मील क्षेत्रफल और १० करोड़ के लगभग आबादी इस अल्प-काल ही में भारत के आन्तरिक भाग बन गए। उसी तरह, जिस तरह भारत के अन्य राज्य हैं। हैदराबाद, मैसूर और काश्मीर को पृथक्-पृथक् और अन्य कितनी ही रियासतों के संघ बनाकर उन्हें 'बी' श्रेणी के राज्य बना दिया गया। सैकड़ों छोटी-छोटी रियासतें आसपास के बड़े राज्यों में मिला दी गईं। परिणाम यह हुआ कि भारत भर में पूर्ण प्रजातन्त्र स्थापित हो गया और सन् १९५२ का निर्वाचन समूचे देश में बालिग़ मताधिकार के आधार पर सम्पन्न हुआ।

इस नवीन भारत की एकता के निर्माण में सरदार पटेल के इन २७ भाषणों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वाधीनता के पहले २½ वर्षों की भारतीय समस्याओं पर इन भाषणों में जो प्रकाश डाला गया है, उसका महत्त्व ऐतिहासिक है। ये भाषण देश के लिए चिरकाल तक प्रकाश स्तम्भ का काम देते रहेंगे।

इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक ग्रन्थ का मूल्य प्रचार के उद्देश्य से बहुत कम रक्खा गया है। पुस्तक में ३५० बड़े आकार के पृष्ठों के अतिरिक्त १६ पृष्ठ सरदार पटेल के सुन्दर चित्र और नवीन भारत का एक मानचित्र भी दिया गया है।

मूल्य : सजिल्द ५) रुपया

प्रकाशक :

पब्लिकेशन्स डिवीज़न,

ओल्ड सेक्रेटेरियट,

दिल्ली-८

Printed by the Albion Press, Kashmere Gate Delhi-6, and published on behalf of Community Projects Administration by the Publications Division, Delhi-8.